संत श्री आसारामजी बापू द्वारा प्रेरित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ सितम्बर २००९
वर्ष : १९ ❖ अंक : ३

पूज्य बापूजी का आत्मसाक्षात्कार दिवस : २० सितम्बर २००९
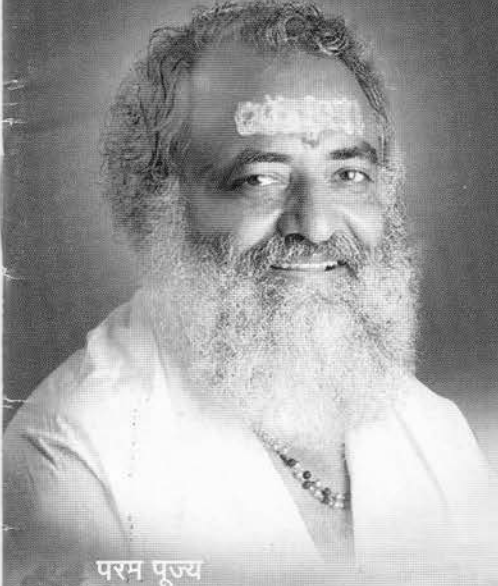
परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

पूज्य बापूजी अपनी
अवधूती मस्ती में

(पढ़िये टाइटल पेज ४ पर)

हमारा न कोई संत है दूजा, आओ गाँव करें तुमरी पूजा।
आसाराम तब मन में धारे, निराकार आधार हमारे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर सूरत (गुज.) में मक्खन-मिश्री के साथ
सत्संग-रस का पान करता विशाल भक्त-समुदाय।

पूज्य बापूजी की अमृतवाणी का लाभ लेती उदयपुर (राज.) की सत्संग-प्रेमी जनता एवं पूनम व्रतधारी।

सत्संग की समाप्ति पर पूज्य गुरुदेव की सामूहिक आरती करते नोएडा (उ.प्र.)वासी।

ऋषि प्रसाद
मासिक पत्रिका
हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड़ व अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १९ अंक : ३
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०१)
१ सितम्बर २००९ मूल्य : रु. ६-००
भाद्रपद-आश्विन वि.सं. २०६६

स्वामी : महिला उत्थान ट्रस्ट
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : महिला उत्थान ट्रस्ट, यू-१४, स्वस्तिक प्लाजा, नवरंगपुरा, सरदार पटेल पुतले के पास, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक	: रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक	: रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक	: रु. २२५/-
(४) आजीवन	: रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में
(सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक	: रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक	: रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक	: रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक	: US $ 20
(२) द्विवार्षिक	: US $ 40
(३) पंचवार्षिक	: US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US$20	US$40	US$80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट (अमदावाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

संपर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८, ६६११५५००.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

Subject to Ahmedabad Jurisdiction

इस अंक में...

(१) राष्ट्र-जागरण का शंखनाद २
(२) तुम्हारा साक्षात्कार कैसे करें ? ८
(३) प्रेरक प्रसंग ९
✲ बेटा हो तो ऐसा !
(४) आन्तर आलोक १०
✲ भगवान के दर्शन से भी ऊँचा
(५) पर्व मांगल्य १२
✲ विजय दिलानेवाला अद्भुत रथ
(६) गुरु संदेश १४
✲ बुद्धियोग का आश्रय लो
(७) श्राद्ध महिमा १६
(८) पवित्र बुद्धि का पवित्र विचार १७
(९) सद्गुरु महिमा १८
✲ परमात्मस्वरूप सद्गुरु
(१०) विद्यार्थियों के लिए २०
✲ उन्नति चाहो तो विनम्र बनो
(११) घर-परिवार २२
✲ लूट मची, खुशहाली छायी
(१२) रोग-शमन के रहस्यमय साधन २४
(१३) गुरुभक्तियोग की महत्ता २५
(१४) सत्संग पराग २६
✲ आदर तथा अनादर...
(१५) शरीर स्वास्थ्य २८
✲ मधुमेह : सुरक्षा व उपाय
(१६) भक्तों के अनुभव २९
✲ मृत माँ को दिया जीवनदाना
(१७) संस्था समाचार ३०

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

संस्कार	A2Z NEWS	IBN7	RAFTAAR news	care WORLD	MA TV
रोज सुबह ७-५० बजे (सोम से शुक्र)	रोज सुबह ७-३० बजे	रोज सुबह ६.१० बजे	रोज सुबह ८ बजे व रात १० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	(यूरोप) दोपहर १२-३० बजे (बुध व शनि)

राष्ट्र-जागरण का शंखनाद

दिनांक २ अगस्त २००९ को मोहाली (पंजाब) की धरती पर हुए संत-सम्मेलन में देश के सुदूर क्षेत्रों से आये साधु-संतों ने भारतीय संस्कृति की रक्षा, गौ-रक्षा, राष्ट्र-जागरण आदि के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये । आचार्य धर्मेन्द्र (संस्कृत महाविद्यालय, दिल्ली) ने स्वस्तिवचन कर सम्मेलन का शुभारंभ किया ।

*** युवा क्रांतिद्रष्टा संत दिनेश भारतीजी (जिन्होंने अमरनाथ श्राइन बोर्ड के जनांदोलन में मुख्य भूमिका निभायी थी) :** श्रद्धेय, प्रातःस्मरणीय, सायं-वंदनीय पूज्य संत श्री बापूजी महाराज के चरणों में वंदन करता हूँ ।

आजादी तो हमें मिली है लेकिन ६२ साल की आजादी के बाद देश किस चौराहे पर खड़ा है, यह चिंतन नहीं किया गया । आज समाज की क्या स्थिति है ? तुम्हारे द्वारा अपने बच्चे के लिए एक साल पहले ही ईसाई स्कूल बुक कर लिया जाता है । फिर उधर रटारटी करके पढ़ाया जाता है - 'ए' फॉर 'एपल', 'बी' फॉर 'बैट', 'सी' फॉर 'कैट' माने बिल्ली, 'डी' फॉर 'डॉग' माने कुत्ता । विद्या वह होती है हिन्दुओ ! जो बंधनों से मुक्त करती है और इनकी विद्या बंधनों से मुक्त नहीं करती, बंधन पैदा करती है । क्रिश्चियन स्कूल से निकले तुम्हारे बच्चे को तुम कहोगी : ''बेटा ! तुझे नौ महीने पेट में रखा, तेरे लिए दुःख-दर्द सहन किये...'' तो बेटा अपने पैंट की जेब से नोटों की गड्डी निकालके तुम्हारे मुँह पर मारेगा कि ''मम्मी ! नौ महीने की दुहाई मत देना । ये ले नोट, पूरे साल का किराया काट ले लेकिन आइंदा से मुझे ऋणी मत कहना । मुझे ये खरी-खोटी नहीं सुनाना... ।''

उस बच्चे के हृदय के अंदर ऐसे कुसंस्कार क्यों आये, कहाँ से आये ? क्योंकि तुमने डाला अपनी औलाद को ईसाइयों के स्कूल में ।

अपनी संस्कृति के प्रति गौरव करो हिन्दुओ ! मेरे राम को देखो, अवध की गद्दी चार भाइयों के बीच ठोकर खाती रही । लखन नहीं बैठे, राम ने कहा : ''भरत ! तू बैठ जा ।'' भरत बोले : ''नहीं भैया ! यह अधिकार मैं नहीं ले सकता ।'' और आज हम दो बालिश्त जमीन के लिए अपने भाई को कोर्ट की धूल चटा रहे हैं । यह हमारी परम्परा नहीं । हमने अपने लिए नहीं, अपनों के लिए जीना सीखा है । भारत को ये सुसंस्कार किसने दिये ? किसने सींचा ? दधीचि बनकर हमने समाज के लिए हड्डियाँ अर्पित कीं । यदि सनातन संस्कृति की धारा को प्रवाहित करने के लिए संत उन्मुख न होते, अग्रसर न होते तो आज यह भारत की धरा श्री-हीन हो गयी होती, भारत भारत न रहता, हम हिन्दू हिन्दू न रहते । इसलिए इन सारे षड्‌यंत्रों से निकलना है। कसम है तुम्हें अपने पूर्वजों की, कसम है उन हिन्दू माँ के खून की, कसम है उन हिन्दू माँ की कोख की कि अपने बच्चों को क्रिश्चियन स्कूल में नहीं डालोगे। तुमको यह संकल्प लेना है ।

देश के अंदर पाकिस्तान से बार-बार घुसपैठ हो रही है। पाकिस्तान, मुसलमान और ईसाई मिलके इस देश के संतों का सर्वनाश चाहते हैं । क्यों ? हमारे यहाँ पर आज भी सबूत है कि जब इंग्लैण्ड के अंदर मैकाले ने भारत को गुलाम बनाने का षड्‌यंत्र बनाया तो मैकाले ने कहा : 'भारत गुलाम कैसे होगा ?' तो बोले : 'भारत के संतों पर

चरित्रहीनता के आरोप लगाने का षड्यंत्र रचो, कीचड़ फेंको उनके ऊपर, क्योंकि भारत के संत भारत को ऊर्जा देते हैं, तेज देते हैं, ब्रह्मचर्य की शिक्षा देकर उनके हृदय के अंदर ओज का संचार करते हैं। गुरुकुलों को नष्ट कर दो, भ्रष्ट कर दो।' यह मैकाले ने षड्यंत्र रचा और वही मैकाले का षड्यंत्र आज भारत के अंदर परवान चढ़े जा रहा है। हिन्दुओ ! अब तुमको उन्हें सबक सिखाना है। कहो गर्व से हम हिन्दू हैं, हिन्दुस्तान हमारा है !

इसीके साथ पूज्य महाराजश्री के चरणों में वंदन करता हूँ।

✲ संत श्री हरपाल सिंहजी, प्रमुख, रतवाड़ा साहिब गुरुद्वारा : परम पूज्य बापूजी महाराज, संत-समाज व सारे सत्संगी बहनो-

भाइयो ! बापूजी जो प्यार हमें देते हैं, वह किसीसे छुपा नहीं है। हमारे पूज्य गुरुदेव बाबाजी जो कि अब तो शरीर में नहीं हैं, वे भी इनके बारे में कहते थे कि 'आज बापूजी जैसे महान कर्मयोगी संत संसार में बहुत ही कम मिलते हैं, जो ऐसा सर्वसाँझा अद्वैत सिद्धांत का प्रचार संसार में कर रहे हैं।'

परम पूज्य महापुरुष बापूजी इन्कलाब ला सकते हैं, इनकी संगत से हम सबको एक दिशा मिलती है। ये एक ऐसी सुगंध बाँट रहे हैं, जो कि शब्दों में बयान करना मुश्किल है। इसलिए मैं इनको दिल की गहराइयों से धन्यवाद देता हूँ, कोटि-कोटि नमस्कार करता हूँ।

✲ डॉ. सुमन, हिन्दू जागरण मंच (भूतपूर्व पादरी रोबर्ट सोलोमन, इंडोनेशिया) : परम पूजनीय श्री बापूजी, उपस्थित संतगण एवं माताओ-बहनो !

मेरा यह परम सौभाग्य है कि मुझे पूज्य

बापूजी के श्रीचरणों में आने का मौका मिला। गुरु-शिष्य परम्परा का निर्वाह करते हुए पूजनीय बापूजी से जो संस्कार हम लोगों ने ग्रहण किये हैं, आज उनका विस्तार करने का संकल्प लेकर हम जायेंगे।

जो नहीं है राम का, वह नहीं किसी काम का।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम ॥

मेरा पूर्व नाम रॉबर्ट सोलोमन रह चुका है। मैं मूलरूप से इंडोनेशिया जकार्ता का रहनेवाला हूँ। पढ़ाई-लिखाई करने के बाद मैं मिशनरीज के लिए कार्य कर रहा था। देश और विदेश में मैं मिशनरीज के प्रचार-प्रसार में संलग्न था। हिन्दू दर्शन, हिन्दू चिंतन को न मैं जानता था, न मैं मानता था और न ही मुझे कभी मौका मिला था। लेकिन बड़े भाग्य से इस दर्शन, इस चिंतन को देखने और समझने का अवसर मिला और फिर श्रेष्ठ गुरु की कृपा भी मेरे ऊपर हुई।

अब मैं हिन्दू हूँ, सनातनी परम्परा को मानता हूँ। शायद मेरे पूर्वजों ने कुछ अच्छे कर्म किये होंगे, जिनका फल आज मुझे मिल गया। मैंने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी के बारे में, श्रीकृष्णचन्द्रजी के बारे में, लक्ष्मणजी के बारे में और भी कितने गॉड और गॉडेजेज हैं उनके बारे में सुना ही है लेकिन प्रत्यक्षरूप से पूजनीय बापूजी का दर्शन कर लिया, मैं तो तर गया !

आज भारत की परम्पराओं पर, संस्कारों पर प्रहार करने की चेष्टा की जा रही है। इसलिए आज समय की माँग है कि हम ऊँच-नीच, भेदभाव को भुलाकर समरस हिन्दू समाज का निर्माण करें। हिन्दुत्व मानवता की परिभाषा है। उस परिभाषा को चरितार्थ करने का यह एक सुअवसर है।

❋ श्री रामस्वरूपदास ब्रह्मचारीजी (ऋषिकेश), अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, उत्तराखंड : परम पूजनीय, श्रद्धेय,

प्रातःस्मरणीय संत श्री आसारामजी बापू महाराज, सभी संत भगवान, पूज्य माताओ-बहनो व भाइयो !

आज हम सबके लिए और आपके लिए बड़ा खुशी का दिन है। श्रद्धेय श्री आसारामजी बापू महाराज के चरणों में आप बैठे हो, भाग्यशाली हो। ये कोई आम आत्मा नहीं हैं, ये परमात्मा हैं। गुरु के चरणों में जो भी आपका समय लगे, वह समझो भगवान के चरणों में आपका समय लिखा गया।

इस देश पर जब भी आपत्ति आयी, संकट आया तब किसीने बचाया है तो केवल महापुरुषों-संतों ने ही इसको बचाया है। लगभग पौने दो सौ वर्षों तक अंग्रेजों ने यहाँ पर राज्य किया परंतु इस देश के वीरों ने जब अंगड़ाई ली और संतों के चरणों में गये तब संतों ने उपदेश दिया, दिशानिर्देश दिया और इस देश को आजाद करवाया। यह किसकी कृपा हुई ? संतों की। नहीं तो सब लोग यहाँ पर बिकते जा रहे थे।

संतों के ऊपर प्रहार होते हैं और आप चुप बैठे रहते हो, राजा संत की संपत्ति को हड़पता है तो आप चुप होकर बैठे रहते हो ! इसके लिए कब अंगड़ाई लोगे ? संतों की सुरक्षा है तो आपकी सुरक्षा है। संत राष्ट्र की धरोहर हैं, राष्ट्र की संपत्ति हैं। संत पर एक आम व्यक्ति आके झूठा, निराधार कलंक लगाता है और उसको सब लोग सच मान लेते हैं कि 'ऐसा हो गया होगा।' नहीं, हमें उस समय कहना चाहिए : 'ये संत ऐसा काम नहीं कर सकते, तुम किसी स्वार्थ से झूठ बोल रहे हो।' उसकी बात को आप दुत्कार दो तो वह चुप हो जायेगा। बंधुओ ! यदि यहाँ रहना है तो हमें केवल हिन्दू बनकर रहना पड़ेगा और संतों के चरणों में रहना पड़ेगा तथा संतों की बात को मानना पड़ेगा। फिर हम और आप सभी सुखी होंगे।

श्रद्धेय पूज्य बापूजी महाराज ! मैं आपका हार्दिक धन्यवाद करना चाहता हूँ। हमारे अंदर बहुत दिन से यह तड़प थी कि इस देश के लिए कोई संत अंगड़ाई लेते। आज आपने उसके लिए पहल की है। यह बहुत बड़ा काम है, छोटा काम नहीं। 'भारत रक्षा समिति' और ये संत आपके बहुत आभारी हैं, ऋणी हैं। इस देश को बचाने का पहला कार्य आपने किया है। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ! हमारे जीवन, हमारी कुर्बानी की कभी भी आपको आवश्यकता पड़े किसी मोड़ पर तो 'भारत रक्षा समिति' के हजारों संत आपके साथ हैं, आपके चरणों में हैं।

❋ महामंडलेश्वर श्री परमात्मानंदजी महाराज, परमात्मा मंदिर, वृंदावन : ''युगपुरुष, युगावतार, इस युग की महान विभूति हमारे पूज्यचरण, प्रातः-स्मरणीय एवं अनंतश्री विभूषित परम संत आसारामजी महाराज के

चरणों में मैं नमन करता हूँ, वंदन करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ। उनके लिए हमारे हृदय में आराध्यदेव जैसा सम्मान है।

प्रवचनों में गाऊँ मैं सुनाऊँ तुझे जाऊँ कहाँ ।
मेरा प्यारा बापू मुझे प्राणों से भी प्यारा है ॥

हमारे युगपुरुष, अवतार पूज्य बापूजी के रूप में आज हमारे बुद्ध मिल गये हमें, हमारे गुरु नानकजी हमें मिले हुए हैं, हमारे सूरदासजी हमें मिले हुए हैं, हमारे तुलसीदासजी बापूजी के रूप में

बैठे हैं। आज इनका सम्मान तुलसीदासजी का सम्मान है, कबीर साहब का सम्मान है, महात्मा बुद्ध का सम्मान है।

रावण को दुष्ट शूर्पणखा ने जगाया और दुष्ट रावण ने कुंभकर्ण को जगाया तो जागनेवाले मारे गये लेकिन संतस्वरूप हनुमंत लाल ने विभीषणजी को जगाया तो जागनेवाले विभीषणजी तर गये। दुष्ट जब किसीको जगाता है तो जागनेवाला मर जाता है और ये संत जब किसीको जगाते हैं तो जागनेवाला तर जाता है। बिना भगवान की कृपा के ऐसे संतों का दर्शन नहीं होता, ऐसे परम संत सद्गुरुदेव के रूप में प्राप्त नहीं होते।

अब मोहि भा भरोस हनुमंता।
बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता॥

यदि संतकृपा हो जाये तो,
भगवंत मिलन हो जाता है।
ईश्वर किरपा कर देवे तो,
मिलते सद्गुरु प्यारे हैं।
इस सत्संगरूपी नौका ने,
कई पापी पार उतारे हैं॥

❋ स्वामी तीर्थानंदजी महाराज, महामंत्री, भारत रक्षा समिति :

सत्संगत्वे निःसंगत्वं निःसंगत्वे निर्मोहत्वम्।
निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वं निश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्तिः॥

'सत्संग से निःसंगता की प्राप्ति होती है, निःसंगता से निर्मोहिता की प्राप्ति होती है, निर्मोहिता से निश्चल तत्त्व की प्राप्ति होती है और इसीसे जीवन्मुक्ति प्राप्त होती है।' यह सत्संग की महिमा है।

❋ आचार्य स्वामी रमेशानंदजी, वृंदावन : परम श्रद्धेय, परम पूज्य श्री बापूजी !

यतो धर्मः ततो जयः। जहाँ धर्म होता है वहीं विजय होती है। अधार्मिक लोग थोड़ी देर के लिए धर्म को ढक तो देते हैं, जैसे पाण्डवों को वनवास में तो भेज दिया लेकिन जब धर्म लौटकर आता है तो अधर्म को समूल उखाड़कर नष्ट कर देता है, जैसे पाण्डवों द्वारा कौरवों का सर्वनाश हो गया।

याद रखना :

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

जहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण गुरु के रूप में हों और जहाँ अर्जुन जैसा शिष्य के रूप में हो, जहाँ बापूजी जैसे सद्गुरुदेव और आप जैसे उनके शिष्य विराजमान हों, बापूजी के ज्ञान की सरिता में स्नान कर रहे हों, वहीं पर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति रहती है; कभी भी आपकी पराजय नहीं होनेवाली।

जिसके जीवन में धर्म का महत्त्व नहीं है, उसकी रक्षा कभी भगवान करेंगे नहीं। भगवान रक्षा करने कब आते हैं? जब संतों पर विपदा पड़ती है। जिनसे संतों को कष्ट प्राप्त होता है, ऐसे बड़े-बड़े राजा नष्ट हो जाते हैं, भ्रष्ट हो जाते हैं।

मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं।
ते नरेस बिनु पावक दहहीं॥

धर्म का इतना बड़ा ज्ञान, इतनी महिमा बापूजी ने केवल पूरे राष्ट्र में ही नहीं, विदेशों तक भी पहुँचायी। इस उम्र में भी उनका इतना बड़ा सत्कार्य ऐसा है कि उसकी प्रशंसा के लिए कोई शब्द नहीं है ! ऐसे महापुरुष के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

❋ बाबा फकीर सिंहजी, रतवाड़ा साहिब : परम पूज्य बापूजी महाराज ! आपके स्वागत में मैं

इतना ही कहना चाहूँगा -
मेरे मालिक, मेरे साहेबा !
तेरे लिए प्यार लाया हूँ ।
नहीं कुछ पास मेरे है,
ये आँसू दो-चार लाया हूँ ॥

※ महंत बाबा रामदासजी, उदासीन अखाड़ा : परम पूजनीय संत आसारामजी महाराज, जिनका मैं पूरा बखान नहीं कर सकता, इन्होंने कितनी ही अपवित्र आत्माओं को पवित्र बनाया है। इन संत-महापुरुष को सुनते तो बहुत समय से हैं, इनका साहित्य भी बहुत समय से पढ़ रहे हैं लेकिन दर्शन का सौभाग्य आज ही प्राप्त हुआ ।

संत-महापुरुष अपने लिए नहीं आते हैं, वे तो दूसरों के लिए, जो आत्माएँ भटक रही हैं उनको तारने के लिए, हमारे लिए आते हैं । जैसे आज हमारे संत आसाराम बापूजी ने करोड़ों आत्माओं को तार दिया और आगे भी तारते रहेंगे ।

※ स्वामी अतुलकृष्ण महाराज, मार्गदर्शन मंडल प्रमुख, वि.हिं.प. (पंजाब) : आप सभी अपने साहस, शौर्य, पराक्रम का स्मरण करें जैसे कि 'श्री रामचरित-मानस' में जामवंतजी कहते हैं : **का चुप साधि रहेहु बलवाना ।**

अपने पुरुषार्थ का हम स्मरण करें, इसीसे राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। हमें सशक्त, समृद्ध और सांस्कृतिक भारत चाहिए । भारत के पूज्य संतों, धर्माचार्यों को कैसे-कैसे लांछित करने का प्रयास किया जा रहा है । उसकी विभीषिका को हम समझ सकते हैं । हम सभी अपने कर्तव्य को समझें और राष्ट्र की समृद्धि में अपना योगदान दें ।

※ परिव्राजक संत श्री सुनील शास्त्रीजी, महाराष्ट्र : परम आराध्य भारत माता, भारत माता के वक्षःस्थल पर विराजित पंजाब प्रांत के इस पवित्र प्रांगण में व्यासपीठ पर व्यास के रूप में विराजमान भारत माता के हृदयपुत्र संत श्री आसारामजी बापू, दूर-दूर से आये हमारे धर्म के वाहक, धर्म के रक्षक संतवृंद, हमारी भारत माता के वीर पुत्रो !

आज बापू ने भारत माता को बचाने के लिए जो योगदान दिया है, उसके लिए युग-युगान्तर तक भारत माता के पुत्र उनके ऋणी रहेंगे ।

आज मैं मिशनरियों के धर्मशास्त्र पर चर्चा करनेवाला हूँ। आप-हम गीता-भागवत पढ़ाते हैं, प्रवचन करते हैं और सिखाते हैं कि भाई को भाई से कैसे रहना चाहिए, पिता को पुत्र के साथ कैसे रहना चाहिए, चींटी को भी चीनी डालो, वृक्ष में भी शरबत डालो, गाय को भी माँ कहो, पेड़ में भी भगवान देखो, पत्थर में भी भगवान देखो। 'हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है' का आप पाठ पढ़ाते हैं लेकिन ये मिशनरी क्या पढ़ा रहे हैं ?

बाइबिल के कुछ चेप्टर मैं आपको सुनाना चाहूँगा । बाइबिल के उत्पत्ति विषय के पहले पन्ने में लिखा है कि इनके भगवान ने पहले पृथ्वी बनायी और तीन दिन बाद सूरज और चाँद बनाये । तीन दिन तक जब सूरज और चाँद नहीं थे तो दिन और रात कैसे हुए ? जब दिन-रात नहीं थे तो इनके भगवान ईसा मसीह ने तीन दिन का मैथेमेटिक्स कहाँ से लगाया ?

बाइबिल के उत्पत्ति विषय, लूथ के प्रकरण में

३६वीं लाइन है – 'इस प्रकार लूथ की दोनों बेटियाँ अपने पिता से गर्भवती हुई और बड़ी ने एक पुत्र जना और उसका नाम मोआब रखा । वह मोआब नामक जाति का, जो आज तक है, मूल पिता हुआ । और छोटी ने भी एक पुत्र जना और उसका नाम बेनम्मी रखा । वह अम्मोन्-वंशियों का, जो आज तक हैं, मूल पिता हुआ ।'

दारू पी-पीकर अपनी बच्ची के साथ बलात्कार करके बच्चा पैदा करना, क्या यह धर्म है ? क्या इसे भारतीय संस्कृति स्वीकार करेगी ? क्या अपनी बेटी के साथ बलात्कार करनेवाले पंथ को हमारा भारतवासी स्वीकार करेगा ? नहीं । बाइबिल में लिखा है कि अपने बेटे को भी मारकर मांस खाना चाहिए । यूहन्ना चेप्टर, ५३वीं लाइन- 'यीशु ने उनसे कहा : मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उसका लहू न पियो, तुममें जीवन नहीं ।'

हमारे भगवान हनुमानजी को ये मिशनरी गाली देते हैं । हमारे हनुमानजी ने लंका नगरी को जलाया, रावण उनका एक बाल भी बाँका नहीं कर पाया लेकिन तुम्हारे भगवान के हाथों में कीलें ठोक दीं, पैरों में कीलें ठोक दीं और भाला भोंक-भोंककर वहाँ के राजा ने मार डाला । जो अपनी रक्षा नहीं कर सका, वह भारतवासियों की रक्षा क्या करेगा !

जितना पापाचार इसमें है, मैं अल्प समय में नहीं बता सकता । ये क्रिश्चियन धर्म का भारत में प्रचार कर रहे हैं कि एड्स धर्म का प्रचार कर रहे हैं ? इसलिए मैं कहता हूँ कि यह क्रिश्चियन धर्म का प्रचार नहीं, एड्स धर्म का प्रचार है ।

आज गौओं की स्थिति इतनी बुरी है कि दिल्ली में यमुना में हजारों लीटर गौ का खून गिर रहा है, हजारों टन गाय का मांस उबालकर भारत में घी बनाया जाता है ।

आश्रम के बारे में कुप्रचार करके सूरज पर कालिख लगाने का प्रयास किया गया । प्रचार किया गया कि 'लाई डिटेक्टर टेस्ट' में आश्रम के लोगों ने कुछ रचने (काला जादू करने) की बात स्वीकार की है ।
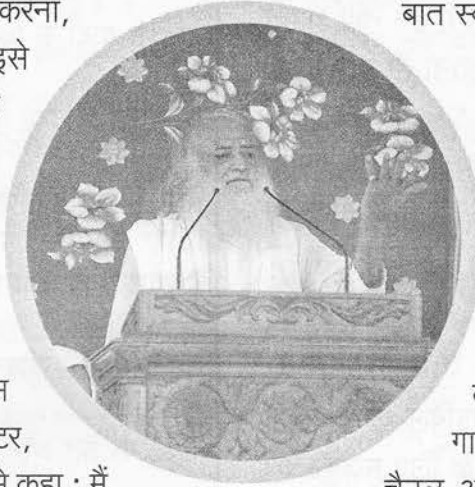
मेरे पास सारे दस्तावेज अधिसूचना के अधिकार के आधार पर हैं । उसमें कहीं भी एक भी प्रमाण वहाँ की सी.आई.डी. ने, वहाँ के प्रशासन ने नहीं रखा फिर भी मीडिया को माध्यम बनाकर भारत की संस्कृति को गाली क्यों दी जा रही है ? जो चैनल आसारामजी बापू या भारतीय संस्कृति के विरुद्ध दिखाते हैं, ऐसे चैनलों को बहिष्कृत कर दिया जाय ।

इन्हीं बातों के साथ सभीमें विराजित अंतरात्मा को नमन करते हुए मेरी यह प्रार्थना समर्पित है ।

परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू :

घंटों बैठकर सत्संग सुननेवाले तपस्वी सत्संगियों के बीच संतों के हृदय की व्यथा, देश की परिस्थिति की बात जगन्नियंता तक पहुँच गयी । ऐसे लोगों के संकल्प, शुभ भाव और कर्म उज्ज्वल भविष्य की खबर देंगे । अपना पुरुषार्थ, उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति, पराक्रम जहाँ होता है, वहाँ पद-पद पर परमात्मदेव की सत्ता-चेतना काम करती है, हम लोगों को तो निमित्त होना है।

न जाने कितने करोड़ रुपये और कितने

दिमाग साजिश करने में लगे थे लेकिन किसीकी दाल नहीं गली । पहले से भी सत्संगी बढ़ गये हैं। ये आप सभी संतों के शुभ संकल्प हैं । रतवाड़ा साहिब के हरपाल सिंहजी महाराज ने पहला संदेशा भेजा कि बापू हम और हमारे सिख, जो हमारे सत्संगी सिख हैं, सब आपके लिए तैयार हैं। कई दूसरे सिख समाज के आगेवानों ने कहा कि 'अगर कुर्बानी देनी पड़े तो पहला हमारा नाम।' आपके शरीर की कुर्बानी हम नहीं चाहते हैं, आपका सद्भाव है बस इतना ही काफी है । किसीकी कुर्बानी लेकर हम धर्म की रक्षा नहीं करेंगे । लेकिन धर्म को क्षीण करनेवालों की कुर्बानी कुदरत अपने-आप लिये जा रही है और उनकी मति-गति मारी जा रही है।

यतो धर्मः ततो जयः
यतो धर्मः ततो अभ्युदयः ।

लेकिन शास्त्रीजी ने बाइबिल के वे वचन सुनाकर हमको विचार करने के लिए मजबूर कर दिया है। इसीलिए ये पादरी डॉ. सुमन हिन्दू धर्म के चरणों में आ गये हैं। डॉ. सुमन की इस सूझबूझ का भी हम स्वागत करते हैं । सभी संतों का हम हृदयपूर्वक स्वागत करते हैं । आप सभी संतों ने अपना घर समझकर, अपना मंच समझकर एकाएक पधारकर दर्शन दिये । भक्तों को भी आनंद हुआ, हमें भी आनंद हुआ। दिनेश भारतीजी ने अपनी ओजस्वी वाणी से जम्मू के लोगों में तो ओज-तेज भरा है, ये जहाँ जायें इनका ओज-तेज, प्रकाश भगवान विशेष-विशेष फैलायेंगे।

सभी संतों के निष्काम भाव से जो वचन, उद्गार निकले वे सभी-के-सभी सराहनीय हैं । आप सभीको खूब-खूब नमस्कार, धन्यवाद । नारायण... नारायण... नारायण... नारायण... ❑

तुम्हारा साक्षात्कार कैसे करें ?

दिल के दिलबर तुम्हीं हो,
तुम्हारा दीदार कैसे करें ?
चाहत है तुमसे मिलने की,
प्रभु सच्ची पुकार कैसे करें ?
प्रियतम प्यारे तुम कैसे हो,
तुमसे प्यार कैसे करें ?
सहज है प्रेम निभाना तुमसे,
प्रेमाभक्ति अपार कैसे करें ?
तुम्हारी यादों से दिल भरता नहीं,
आँसुओं की धार कैसे करें ?
तड़प रहे हैं विरह वेदना में,
अब नाम उचार कैसे करें ?
मधुर मिलन होगा हमारा,
प्रभु एतबार कैसे करें ?
है श्वासों का क्या भरोसा,
तेरा इंतजार कैसे करें ?
तुमने दिया है जीवन,
जीवन उद्धार कैसे करें ?
सेवा, परहित और जीवन में,
तुमसे अनुराग कैसे करें ?
निरुपाधि निरामय हो तुम,
तुमको साकार कैसे करें ?
कैसे करें फूल दीप तुम्हारा,
पूजन, शृंगार कैसे करें ?
परम शांत है स्वरूप तुम्हारा,
शब्द झंकार कैसे करें ?
सदा एकरस हो तुम,
तुम पर रसधार कैसे करें ?
शुद्ध, बुद्ध, चैतन्य हो तुम,
तुमसे तदाकार कैसे करें ?
तेरा ही अंश है जीवन,
इसे निरहंकार कैसे करें ?
द्वैत, अद्वैत सब हो तुम स्वामी,
तुमसे एकाकार कैसे करें ?
सच्चिदानंद सर्व आत्म तुम हो,
प्रभु तुम्हारा साक्षात्कार कैसे करें ?

- जीवन, अमदावाद ।

बेटा हो तो ऐसा !

टिहरी के राजा महेन्द्रप्रताप निःसंतान थे। एक बार उन्होंने पुत्र-जन्मोत्सव के निमित्त पंडित मदनमोहन मालवीय व अन्य मित्रों को न्योता दिया।

मालवीयजी सहित सभी लोग आ गये। सभीको भोजन वगैरह करवाया गया। तत्पश्चात् मालवीयजी बोले : ''भाई ! बेटे का नाम मुझसे रखवाना चाहते हो न, तो बेटे को ले आओ।''

राजा महेन्द्रप्रताप गये महल में और रानी को ले आये। मालवीयजी ने रानी से पूछा : ''बेटा कहाँ है ?''

महेन्द्रप्रताप ने कहा : ''बेटा रानी को नहीं, मुझे हुआ है।''

यह सुनकर सभी चकित हो गये कि राजा क्या बोल रहे हैं ! मालवीयजी ने पुनः कहा : ''लाओ, आपको जो बेटा हुआ है उसका नाम रख दूँ।''

राजा ने कहा : ''मेरे १०० गाँव हैं। उनमें से मैं ९९ गाँव विद्यार्थियों को ओजस्वी-तेजस्वी बनाये ऐसी संस्था के लिए अर्पित करता हूँ, ताकि विद्यार्थी केवल पेटपालू, प्रमाणपत्र के भगत न बनें परंतु अपने इहलोक-परलोक को सँवारनेवाली विद्या को पाकर महान आत्मा बनें। केवल एक गाँव मैं अपने गुजारे के लिए रखता हूँ। मुझे यही सद्विचाररूपी बेटा पैदा हुआ है।''

सभी उपस्थितों का हृदय पिघल गया और मदनमोहन मालवीयजी की आँखों में भी पानी आ गया। वे बोले : ''महेन्द्रप्रताप ! एक-दो या चार-पाँच बच्चों के लिए कई स्वार्थी लोग जी-जीकर खत्म हो जाते हैं। भारत के सपूतों के कल्याण के लिए आपको जो बेटा पैदा हुआ है, जो शुभविचाररूपी पुत्र उत्पन्न हुआ है उसका नाम भी दिव्य होना चाहिए। उस बेटे का मैं नाम रखता हूँ - प्रेम महाविद्यालय।''

इसी 'प्रेम महाविद्यालय' में शिक्षा पाकर संपूर्णानंद एवं जुगल किशोर बिरला जैसों का प्रागट्य हुआ।

राजा महेन्द्रप्रताप की तरह समाज के नौनिहालों को संस्कार एवं आत्मविद्या से पुष्ट करने में यत्नशील 'बाल संस्कार केन्द्र' चलानेवाले पूज्य बापूजी के हजारों शिष्य भी कितने धन्यवाद के पात्र हैं ! ❑

सत्संग जीवन का कल्पवृक्ष है

✼ परमात्मा मिलना उतना कठिन नहीं है जितना कि पावन सत्संग का मिलना कठिन है। यदि सत्संग के द्वारा परमात्मा की महिमा का पता न हो तो सम्भव है कि परमात्मा मिल जाय फिर भी उसकी पहचान न हो, उनके वास्तविक आनंद से वंचित रह जाओ। सच पूछो तो परमात्मा मिला हुआ ही है। उससे बिछुड़ना असम्भव है। फिर भी पावन सत्संग के अभाव में उस मिले हुए मालिक को कहीं दूर समझ रहे हो।

✼ पावन सत्संग के द्वारा मन से जगत की सत्यता हटती है। जब तक जगत सच्चा लगता है तब तक सुख-दुःख होते हैं। जगत की सत्यता बाधित होते ही अर्थात आत्मज्ञान होते ही परमात्मा का सच्चा आनंद प्राप्त होता है। हम चाहें तो महापुरुष हमको उसका स्वाद चखा सकते हैं परंतु इसके लिए सत्संग का सेवन करना जरूरी है। हृदय में सच्ची जिज्ञासा एवं श्रद्धा होना जरूरी है। जीवन में एक बार सत्संग का प्रवेश हो जाय तो बाद में और सब अपने-आप आ मिलता है और भाग्य को चमका देता है।

भगवान के दर्शन से भी ऊँचा

(परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू का आत्मसाक्षात्कार-दिवस : २० सितम्बर)

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

आत्मसाक्षात्कार करना ही मनुष्य-जीवन का एकमात्र उद्धेश्य है । जीव, जगत (स्थूल जगत, सूक्ष्म जगत) और ईश्वर - ये सब माया के अंतर्गत आते हैं। आत्मसाक्षात्कार माया से परे है । जिसकी सत्ता से ये जीव, जगत, ईश्वर दिखते हैं, उस सत्ता को 'मैं' रूप से ज्यों-का-त्यों अनुभव करना, इसका नाम है आत्मसाक्षात्कार । जन्मदिवस से भी हजारों गुना ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है आत्मसाक्षात्कार-दिवस । भगवान कहते हैं :

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥

'हजारों मनुष्यों में कोई विरला सिद्धि के लिए यत्न करता है और उन सिद्धों में से कोई विरला मुझे तत्त्वतः जानता है ।'

आत्मसाक्षात्कार को ऐसे कोई विरले महात्मा ही पाते हैं । योगसिद्धि, दिव्य दर्शन, योगियों का आकाशगमन, खेचरी, भूचरी सिद्धियाँ, भूमि में अदृश्य हो जाना, पानी में गोता मारकर पानीमय हो जाना, अग्नि में प्रवेश करके अग्निमय होना, लोक-लोकांतर में जाना, छोटा होना, बड़ा होना इन अष्टसिद्धियों और नवनिधियों के धनी हनुमानजी आत्मज्ञानी श्रीरामजी के चरणों में गये, ऐसी आत्मसाक्षात्कार की सर्वोपरि महिमा है । साधना चाहे कोई कितनी भी ऊँची कर ले, भगवान राम, श्रीकृष्ण, शिव के साथ बातचीत कर ले, शिवलोक में शिवजी के गण या विष्णुलोक में जय-विजय की नाईं रहने को भी मिल जाय फिर भी साक्षात्कार के बिना यात्रा अधूरी रहती है ।

आज हमारी असली शादी का दिवस है । आज ईश्वर मिलन-दिवस है, मेरे गुरुदेव का विजय-दिवस है, मेरे गुरुदेव का दान-दिवस है, गुरुदेव के पूरे बरसने का दिवस है। दूसरी दृष्टि से देखा जाय तो पूरी मानवता को उत्साहित करनेवाला दिवस है। पूरी मानवता के लिए अपने परम तत्त्व को पा सकने की खबर देनेवाला दिवस 'आत्मसाक्षात्कार-दिवस' है । आज वह पावन दिवस है जब जीवात्मा सदियों की अधूरी यात्रा पूरी करने में सफल हो गया। धरती पर तो रोज करीब डेढ़ करोड़ लोगों का जन्मदिवस होता है । शादी-दिवस और प्रमोशन-दिवस भी लाखों लोगों का हो सकता है। शपथ-दिवस भी कई नेताओं का हो सकता है । ईश्वर के दर्शन का दिवस भी दर्जनों भक्तों का हो सकता है लेकिन ईश्वर-साक्षात्कार दिवस तो कभी-कभी और कहीं-कहीं किसी-किसी विरले का देखने को मिलता है । जो लोकसंत हैं और प्रसिद्ध हैं उनके साक्षात्कार-दिवस का तो पता चलता है, बाकी तो कई ऐसे आत्मारामी संत हैं जिनका हमको-आपको पता ही नहीं । ऐसे दिवस पर कुछ न करें तब भी वातावरण में आध्यात्मिकता की अद्भुत तरंगें फैलती रहती हैं ।

आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस ।
मध्याह्न ढाई बजे, मिला ईस से ईस ॥
देह सभी मिथ्या हुई...

देह मिथ्या हुई पढ़ते तो हो, बोलते तो हो लेकिन देह कौन-सी, पता है ? जो दिखती है वह स्थूल देह है, इसके अंदर सूक्ष्म देह है। विष्णुभक्त होगा तो विष्णुलोक में जायेगा, शिवभक्त होगा तो

शिवलोक में जायेगा, तत्त्वज्ञान नहीं है तो अभी देह मिथ्या नहीं हुई। अगर पापी है तो नरकों में जायेगा फिर पशुयोनि में आयेगा, पुण्यात्मा है तो स्वर्ग में जायेगा फिर अच्छे घर में आयेगा, लेकिन अब न आना-न जाना, अपने-आपमें व्यापक हो जाना है। जब तत्त्वज्ञान हो गया तो देह और आकृति का अस्तित्व अंदर टिकानेवाला शरीर मिथ्या हो गया। स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर सारे बाधित हो गये। जली हुई रस्सी देखने में तो आती है लेकिन उससे आप किसीको बाँध नहीं सकते। ऐसे ही जन्म-जन्मांतरों की यात्रा का कारण जो अज्ञान था, वह गुरु की कृपादृष्टि से पूरा हो गया (मिट गया)। जैसे धान से चावल ले लिया भूसी की ऐसी-तैसी, मूँगफली से दानों को ले लिया फिर उसके आवरण की ऐसी-तैसी, केले से गूदा ले लिया फिर केले के छिलके को तुम कैसे निरर्थक समझते हो, ऐसे ही शरीर होते हुए भी -

देह सभी मिथ्या हुई, जगत हुआ निस्सार।
हुआ आत्मा से तभी, अपना साक्षात्कार॥

आज तो आप लोग भी मुझे साक्षात्कार-दिवस की खूब मुबारकबादी देना, इससे आपका हौसला बुलंद होगा। जैसे खाते-पीते, सुख-दुःख, निंदा-स्तुति के माहौल से गुजरते हुए पूज्यपाद भगवत्पाद श्री श्री लीलाशाहजी बापू, रामकृष्ण परमहंस, रमण महर्षि अथवा तो और कई नामी-अनामी संत समत्वयोग की ऊँचाई तक पहुँच गये, साक्षात्कार कर लिया, ऐसे ही आप भी उस परमात्मा का साक्षात्कार कर सकते हैं। एक व्यक्ति जहाँ जा सकता है दूसरा भी वहाँ पहुँच सकता है। जैसे एक आदमी चाँद देख सकता है तो सभी चाँद को देख सकते हैं, ऐसे ही साक्षात्कारी पुरुषों के इस पर्व को समझने-सुनने से आत्मचाँद की यात्रा करने का मोक्षद्वार खुल जाता है।

मनुष्य ! तू इतना छोटा नहीं कि रोटी, कपड़े, मकान, दुकान या रुपयों में ही सारी जिंदगी पूरी करे दे। इन छूट जानेवाली असत् चीजों में ही जीवन पूरा करके अपने साथ अन्याय मत कर। तू तो उस सत्स्वरूप परमात्मा के साक्षात्कार का लक्ष्य बना। वह कोई कठिन नहीं है, बस उससे प्रीति हो जाय।

असत् पदार्थों की ओर दृष्टि रहेगी तो विषमता बढ़ेगी। यह शरीर मिथ्या है, पहले नहीं था, बाद में नहीं रहेगा। धन, पद ये मिथ्या हैं, इनकी तरफ नजर रहेगी तो राग, द्वेष, विषमता रहेगी लेकिन जो पहले था, अभी है, बाद में रहेगा उस आत्मा की तरफ नजर रहेगी तो आपका व्यवहार समतावाला होगा। धीरे-धीरे समता में स्थिति आने से आप कर्मयोगी होने में सफल हो जाओगे। ज्ञान के द्वारा सत्-असत् का विवेक करके सत् का अनुसंधान करोगे और असत् की आसक्ति मिटाकर समता में खड़े रहोगे तो आपका ज्ञानयोग हो जायेगा। बिना साक्षात्कार के समता कभी आ ही नहीं सकती चाहे भक्ति में प्रखर हो, योग में प्रखर हो, ज्ञान का बस भंडार हो लेकिन अगर साक्षात्कार नहीं हुआ तो वह सिद्धपुरुष नहीं साधक है। साक्षात्कार हुआ तो बस सिद्ध हो गया।

इस महान-से-महान दिवस पर साधकों के लिए एक उत्तम तोहफा यह है कि आप अपने दोनों हाथों की उँगलियों को आमने-सामने करके मिला दें। होंठ बंद करके जीभ ऐसे रखें कि न ऊपर लगे न नीचे, बीच में रखें। फिर जीव-ब्रह्म की एकता का संकल्प करके, तत्त्वस्वरूप से जो मौत के बाद भी हमारा साथ नहीं छोड़ता उसमें शांत होते जायें। यह अभ्यास प्रतिदिन करें, कुछ समय श्वासोच्छ्वास की गिनती करें जिससे मन एकाग्र होने लगेगा, शक्ति का संचय होने लगेगा। धीरे-धीरे इस अभ्यास को बढ़ाते जायेंगे तो तत्त्व में स्थिति होती जायेगी। जीवन की शाम होने के पहले साक्षात्कारी महापुरुषों की कृपा की कुंजी से साक्षात्कार कर लेना चाहिए। ❑

विजय दिलानेवाला अद्भुत रथ

(विजयादशमी : २८ सितम्बर)

भगवान श्रीराम जब लंका की युद्धभूमि में पहुँचे तब विभीषणजी रावण को रथ पर और भगवान श्रीराम को बिना रथ के देख अधीर होके भगवान श्रीराम के चरणों की वंदना करके कहने लगे : 'हे नाथ ! आपके पास न रथ है, न शरीर-रक्षार्थ कवच है और न जूते ही हैं तो फिर आप उस वीर, बलवान शत्रु रावण को कैसे जीत सकेंगे ?' **(श्री रामचरित. लं.कां. : ७९.२)**

भगवान श्रीराम बोले : 'सखे ! सुनो, जिससे विजय प्राप्त होती है, वह रथ दूसरा ही है ।'

रावण का रथ काठ से बना होगा, जिसमें घोड़े जुते होंगे परंतु भगवान श्रीराम अपने जिस रथ का वर्णन कर रहे हैं वह रथ दिव्य एवं अद्भुत है । वह रथ धर्ममय है । उसकी विशेषता है :

सौरज धीरज तेहि रथ चाका ।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥

'शौर्य व धैर्य उस धर्ममय रथ के चक्के हैं और सत्य तथा सदाचार उसकी ध्वजा एवं पताका है ।' **(श्री रामचरित. लं.कां. : ७९.३)**

शूरता शक्ति से संबंध रखती है और शक्ति के साथ यदि धैर्य नहीं हो तो गलत निर्णय होंगे, शक्ति का दुरुपयोग होगा । इसलिए जीवन को धर्ममार्ग पर अग्रसर करने के लिए शौर्य के साथ धैर्य भी आवश्यक है ।

रथ धर्ममार्ग में आगे तो बढ़े लेकिन यदि उसकी ध्वजा, पताका अर्थात् लक्ष्य यदि सत्य व सदाचार न हो तो वह धर्माचरण रावण के राक्षसी धर्माचरण की तरह माना जायेगा । रावण भी भगवान शिव की भक्ति करता था तथा उसने ब्रह्माजी की भी आराधना की लेकिन उसका उद्देश्य मात्र सिद्धि और वरदान पाना था, स्वार्थ व अहंकार को सजाना था । इसलिए उसका जीवन-रथ तप करते समय तो धर्मपथ पर खड़ा दिखता है परंतु असत् उद्देश्य के कारण दुराचरण के पथ पर अग्रसर होते हुए आखिर उसे अधोगति की खाई में गिरा देता है ।

भगवान श्रीराम के रथ के घोड़े तो और भी अद्भुत हैं :

बल बिबेक दम परहित घोरे ।
छमा कृपा समता रजु जोरे ॥

'बल, विवेक, इंद्रियदमन और परोपकार ये चार उसके घोड़े हैं, जो क्षमा, दया और समतारूपी डोरी से रथ में जोड़े हुए हैं ।' **(लं.कां. : ७९.३)**

संसार-समर में खड़े जीवन-रथ को धर्ममार्ग पर गतिशील करने के लिए बलरूपी घोड़ा चाहिए । जितना बल चाहिए उतना ही विवेक, इंद्रियदमन (संयम) और परहित का भाव भी आवश्यक है । यदि विवेकरूपी अश्व जीवन-रथ को सही दिशा में नहीं खींचेगा, इंद्रियदमनरूपी अश्व शक्ति के ह्रास को नियंत्रित नहीं करेगा तथा परोपकारिता-रूपी अश्व बल को स्वार्थ के बजाय परमार्थ में नहीं लगायेगा तो वह जीवन-रथ धर्मपथ पर कब तक टिक पायेगा ?

जीवन में शारीरिक बल पाने की होड़ तो पूरे संसार में देखी जा सकती है परंतु विवेक-बल को पाने के लिए लालायित विरले ही होते हैं । क्योंकि विवेक-बल पाने के लिए दृढ़तापूर्वक सत्संग करना पड़ता है और ऐसा सत्संग प्रभुकृपा

से ही सुलभ होता है ।

बिनु सतसंग बिबेक न होई ।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥

(श्री रामचरित. बा.कां. : २.४)

धर्ममय रथ के घोड़ों को वश में रखने के लिए क्षमा, दया और समतारूपी लगाम चाहिए।

सब जीवों पर दया करना धर्म का मूल है। संत कबीरजी ने कहा : **'दया धर्म को मूल है, पाप मूल अभिमान ।'** जो दयालु हैं वे क्षमाशील भी होते हैं। भृगु ऋषि ने जब भगवान श्रीविष्णु के हृदय पर पदाघात किया तो भगवान ने उनके चरण सहलाते हुए कहा : ''क्षमा कीजिये मुनिवर ! आपका चरण कोमल है और मेरा हृदय कठोर है, अवश्य ही आपको चोट लगी होगी।''

भगवान के मृदु वचन सुनकर भृगु ऋषि ने कहा : ''बस, देवों में आप ही सर्वश्रेष्ठ हैं क्योंकि आपमें क्षमारूपी गुण है।''

जो दयालु और क्षमाशील होते हैं, उनमें सब जीवों के प्रति समता का भाव होता है। दया, क्षमा व समता ही धर्ममय रथ के घोड़ों को वश में रखने की लगाम हैं। ऐसे धर्ममय रथ के सारथी भी साधारण नहीं होते। भगवान श्रीराम कहते हैं :

ईस भजनु सारथी सुजाना ।
बिरति चर्म संतोष कृपाना ॥...

'ईश्वर का भजन ही उस रथ को चलानेवाला चतुर सारथी है। वैराग्य ढाल है और संतोष तलवार है। दान फरसा है, बुद्धि प्रचंड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान (अनुभव-ज्ञान) कठिन धनुष है।'

(लं.कां. : ७९.४)

जैसे सारथी घोड़ों को अपने वश में रखकर रथ को लक्ष्य तक पहुँचाता है, वैसे ही ईश्वर का भजन उपर्युक्त सद्गुणों को जीवन में सँजोकर जीवन-रथ को लक्ष्य तक पहुँचाता है। रथी का मार्ग रोकने के लिए वासनाएँ उसके पथ में खड़ी हो जाती हैं। तब वैराग्य ही वह ढाल है जो उसे वासनाओं की व्यर्थता को दर्शाकर उनसे उसकी रक्षा करती है। संतोषरूपी तलवार वासनाओं को काट फेंकती है। दानरूपी फरसा पूर्वकृत पापराशि को काट देता है। सूक्ष्म बुद्धिरूपी प्रचंड शक्ति रथी को बुद्धियोग का आश्रय लेने में सक्षम बनाती है। धर्ममय रथ के रथी के पास श्रेष्ठ विज्ञान (आत्मिक अनुभव) रूपी मजबूत धनुष है, जिसके माध्यम से वह सद्वृत्तियों का अनुसंधान करता है व शत्रु के दिल को भी जीत लेता है। रावण ने अपनी अंतिम घड़ियों में हाथ जोड़कर कहा था : 'भगवान श्रीराम को मेरे प्रणाम हैं।'

रथी के बाण और तरकश क्या हैं ? भगवान श्रीराम कहते हैं कि 'निर्मल और अचल मन तरकश के समान है। शम (मन का वश में होना), यम (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह) और नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर में चित्त लगाना) - ये नाना प्रकार के बाण हैं।'

(लं.कां. : ७९.५)

शम आदि बाणों को सुरक्षित रखने के लिए मनरूपी तरकश निर्मल व सुस्थिर होना जरूरी है। जैसे चमड़े के पात्र में खीर टिक नहीं सकती, वैसे ही चंचल और अपवित्र मन में ये सद्वृत्तियाँ अधिक देर टिक नहीं सकतीं। धर्ममय रथ के रथी को अभेद्य कवच भी चाहिए। भगवान कहते हैं :

कवच अभेद बिप्र गुर पूजा ।
एहि सम बिजय उपाय न दूजा ॥...

'ब्राह्मणों (ब्रह्मज्ञानियों) और सद्गुरु का पूजन अभेद्य कवच है। इसके समान विजय का दूसरा कोई उपाय नहीं है। ऐसा धर्ममय रथ जिसके पास हो, उसके लिए जीतने को कहीं शत्रु ही नहीं है।' **(लं.कां. : ७९.५-६)**

तात्पर्य, ऐसे धर्ममय रथ का रथी धर्ममार्ग के परम लक्ष्य अद्वैत-अनुभव को **(शेष पृष्ठ १५ पर)**

बुद्धियोग का आश्रय लो

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

'गीता' (६.५) में भगवान कहते हैं :

उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥

'अपने द्वारा अपना संसार-समुद्र से उद्धार करें और अपने को अधोगति में न डालें क्योंकि यह मनुष्य आप ही तो अपना मित्र है और आप ही अपना शत्रु है ।'

अगर आप इंद्रियों को मन से और मन को बुद्धि से तथा बुद्धि को बुद्धियोग से संयत करते हैं तो आप अपने-आपके मित्र हैं । अगर बुद्धियोग नहीं है, बुद्धि दुर्बल है तो बुद्धि मन के कहने में और मन इंद्रियों के कहने में चलने से आप न खाने जैसा खा लोगे । न भोगने की तिथि को भी पति-पत्नी के शरीर का भोग करके अपनेको अकाल मृत्यु में डाल दोगे । न जाने की जगह पर भी जाकर अपना समय बरबाद कर लोगे । न सोचने के विचारों को भी सोच-सोचकर अपनी खोपड़ी खराब कर दोगे । आज विश्व-मानव की ऐसी दुर्दशा है । बहुत दुःखी है विश्व-मानव बेचारा। अगर 'गीता' की शरण आ जाय तो उसके दुःख मिट जायें । जितनी तेजी से आप संसारी चीजों से सुखी होने की कोशिश करते हैं, उतने आप अशांत और दुःखी पाये जायेंगे, बिल्कुल पक्का गणित है ! हमारे बाप-दादाओं और परदादाओं के पास इतनी सुविधाएँ नहीं थीं, जितनी आज आप लोगों के पास हैं फिर भी वे लम्बे आयुष्य के धनी थे और स्वस्थ रहते थे ।

एक राजा ने नगर के अच्छे बूढ़े-बुजुर्गों की सभा की और उनसे पूछा : ''बताओ ! मेरा राज्य कैसा है ? मेरे पिता के राज्य और मेरे राज्य में क्या फर्क है ? पिताजी से पहले मेरे दादाजी का राज्य था । हमारे पूर्वज कई पीढ़ियों से इसी राज्य के राजा होते आये हैं ।''

अब कौन कहे सच्ची बात, किसकी हिम्मत चले ! उस समय जल्दबाजी से खुशामद करके वाहवाही लूटनेवाले बेईमान लोग कम थे लेकिन राजा को सच्ची बात कहेंगे तो फिर मुसीबत करेगा इसलिए सब चुप रहे । एक बूढ़ा उठा । उसने कहा : ''राजन् ! आपका राज्य कैसा है, यह तो मैं नहीं कह सकता हूँ लेकिन आपके दादाजी का राज्य मैंने देखा है, आपके पिताश्री का राज्य भी मैंने देखा है और आपके राज्य में तो हम जी रहे हैं; भगवान आपका हौसला और यश बढ़ाये । मैं तीनों के राज्य में अपनी स्थिति का वर्णन कर सकता हूँ ।''

पहले उसके सिर पर हाथ घुमा दिया ताकि सच्ची बात सुन सके । देखो बोलने की कला, बुद्धियोग कैसा है !

वह बूढ़ा वर्णन करने लगा : ''एक बार मैं जंगल में था और डकैत आ गये । भगदड़ में एक युवती अपने साथियों से बिछुड़ गयी । कैसे भी जान बचाकर वह किसी गिरि-गुफा में छुप गयी । उस सजी-धजी दुलहन को मैंने देखा और उसे अपने घर ले आया तथा उससे पता पूछकर उसके अभिभावकों के हवाले कर दिया । मेरी बुद्धि में भगवत्संतोष हुआ कि यह समाज एवं धर्म के अनुरूप काम हुआ है । ईश्वर की कृपा से मुझे सेवा का अवसर मिला । आपके पिता

का राज्य आया तो मेरे मन में होने लगा कि 'उस युवती के अभिभावक मुझे कुछ इनाम दे रहे थे, मैं और बढ़ा-चढ़ाकर ले लेता तो क्या घाटा था ?' ऐसे मेरा मन थोड़ा पहले की अपेक्षा बुद्धियोग से नीचे गिरा। बुद्धि कमजोर हुई और मन की चालबाजी मेरे पर हावी हो गयी। अब तो मैं इंद्रियलोलुप हो गया हूँ। मुझे लगता है कि इतनी सजी-धजी सुंदरी अपने अभिभावकों से बिछुड़ गयी थी। उसको अपनी बना लेता तो उसके गहने-गाँठे भी मिलते, हीरे-जवाहरात भी मिलते और वह सुंदरी भी मिल जाती ! अभी मेरी बुद्धि ऐसी हो गयी है। अब राजन् ! मैं आपको तो कुछ कह नहीं सकता हूँ लेकिन शास्त्र तो कहता है : **यथा राजा तथा प्रजा।**''

राजा को गालियाँ भी सुना दीं और अपने सिर पर लिया नहीं।

तो आदमी ऊँचाई से नीचे कब गिरता है ? जब बुद्धियोग का आश्रय नहीं लेता। स्वार्थरहित कर्म करना यह बुद्धियोग है व स्वार्थयुक्त कर्म बहुत तुच्छ हैं और बेईमानीवाले कर्म तो कर्ता को ले डूबते हैं। तो देखने, सूँघने, चखने, स्पर्श करने या काम-विकार भोगने में मन लगा तथा मन ने बुद्धि को उसीमें लगाया तो आदमी तुच्छता की तरफ जाता है, नीच योनियों में जाता है। भगवान ने 'भगवद्गीता' के १६वें अध्याय में ऐसे लोगों पर बड़ी रहमत करते हुए उन्हें धिक्कारा है और कहा है : **'नराधमाः', 'आसुरीषु योनिषु क्षिपामि।'**, वे नराधम हैं और मूढ़ता को प्राप्त होते हैं, मैं उन्हें आसुरी योनियों में डालता हूँ। वे वृक्ष हो जाते हैं, नीच योनियों में दुःख भोगते हैं।

जो इंद्रियों के पीछे मन को और मन के पीछे बुद्धि को लगाकर मजों के पीछे पड़ते हैं, उनका भविष्य बहुत दुःखदायी होता है लेकिन जो बुद्धि में भगवद्ज्ञान, भगवद्ध्यान और धर्म को भरते हैं, बुद्धि को पुष्ट करते हैं, उनकी बुद्धि परिणाम का विचार करने लगती है तथा मन बुद्धि के निर्णय के अधीन होकर कार्य करने लगता है और वे देर-सवेर ईश्वर को पा लेते हैं। अगर आपके जीवन में सत्संग है, व्रत और नियम है तो आपकी बुद्धि पुष्ट होती है।

जितने भी दुःख हैं, जितने भी जन्म-मरण हैं वे बुद्धि की कमजोरी से हैं। अतः बुद्धि को पुष्ट करने के लिए एक सुंदर उपाय है : पलाश के पत्ते, बेल के पत्ते, मिश्री और घी मिश्रित करके उसका हवन करें तथा उसके धूप में प्राणायाम करके बुद्धिवर्धक मंत्र अथवा भगवन्नाम जपें तो बुद्धि में बल आ जायेगा, स्मृतिशक्ति बढ़ेगी। आजकल इन्हीं चीजों से निवाई गौशाला में बनायी गयी धूपबत्ती समितियों से लेके उसका उपयोग करें। ❐

(पृष्ठ १३ से 'विजय दिलानेवाला अद्भुत रथ' का शेष)

प्राप्त कर लेगा, फिर उसके लिए मित्र-शत्रु का भेद ही नहीं बचेगा। संसार उसके लिए स्वकल्पित विनोदमात्र रह जायेगा। इसलिए अंत में भगवान कहते हैं :

महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर।
जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥

'हे धीर बुद्धिवाले सखा ! सुनो, जिसके पास ऐसा दृढ़ रथ हो, वह वीर संसार (जन्म-मृत्यु) रूपी महान दुर्जय शत्रु को भी जीत सकता है (रावण की तो बात ही क्या है)।' **(लं.कां. : ८०क)**

भगवान श्रीराम के ऐसे अनुपम धर्ममय रथ का यदि हम लोग भी आश्रय लें तो हम भी जन्म-मृत्यु के कुचक्र से पार होकर अपने सच्चिदानंद स्वरूप को पा लेंगे। स्वरूपनिष्ठ महापुरुषों के द्वारा ही विश्व में आध्यात्मिक क्रांति आती है। ❐

श्राद्ध-महिमा

(श्राद्ध पक्ष : ४ से १८ सितम्बर तक)

राजा रोहिताश्व ने मार्कण्डेयजी से प्रार्थना की : ''भगवन् ! मैं श्राद्धकल्प का यथार्थरूप से श्रवण करना चाहता हूँ।''

मार्कण्डेयजी ने कहा : ''राजन् ! इसी विषय में आनर्त-नरेश ने भर्तृयज्ञ से पूछा था । तब भर्तृयज्ञ ने कहा था : 'राजन् ! विद्वान पुरुष को अमावस्या के दिन श्राद्ध अवश्य करना चाहिए । क्षुधा से क्षीण हुए पितर श्राद्धान्न की आशा से अमावस्या तिथि आने की प्रतीक्षा करते रहते हैं । जो अमावस्या को जल या शाक से भी श्राद्ध करता है, उसके पितर तृप्त होते हैं और उसके समस्त पातकों का नाश हो जाता है ।'

आनर्त-नरेश बोले : 'ब्रह्मन् ! मरे हुए जीव तो अपने कर्मानुसार शुभाशुभ गति को प्राप्त होते हैं, फिर श्राद्धकाल में वे अपने पुत्र के घर कैसे पहुँच पाते हैं ?'

भर्तृयज्ञ : 'राजन् ! जो लोग यहाँ मरते हैं उनमें से कितने ही इस लोक में जन्म लेते हैं, कितने ही पुण्यात्मा स्वर्गलोक में स्थित होते हैं और कितने ही पापात्मा जीव यमलोक के निवासी हो जाते हैं । कुछ जीव भोगानुकूल शरीर धारण करके अपने किये हुए शुभ या अशुभ कर्म का उपभोग करते हैं ।

राजन् ! यमलोक या स्वर्गलोक में रहनेवाले पितरों को भी तब तक भूख-प्यास अधिक होती है, जब तक कि वे माता या पिता से तीन पीढ़ी के अंतर्गत रहते हैं । जब तक वे मातामह, प्रमातामह या वृद्धप्रमातामह और पिता, पितामह या प्रपितामह पद पर रहते हैं, तब तक श्राद्धभाग लेने के लिए उनमें भूख-प्यास की अधिकता होती है ।

पितृलोक या देवलोक के पितर श्राद्धकाल में सूक्ष्म शरीर से श्राद्धीय ब्राह्मणों के शरीर में स्थित होकर श्राद्धभाग से तृप्त होते हैं, परंतु जो पितर कहीं शुभाशुभ भोग हेतु स्थित हैं या जन्म ले चुके हैं, उनका भाग दिव्य पितर लेते हैं और जीव जहाँ जिस शरीर में होता है, वहाँ तदनुकूल भोगों की प्राप्ति कराकर उसे तृप्ति पहुँचाते हैं ।

ये दिव्य पितर नित्य और सर्वज्ञ होते हैं । पितरों के उद्देश्य से शक्ति के अनुसार सदा ही अन्न और जल का दान करते रहना चाहिए । जो नीच मानव पितरों के लिए अन्न और जल न देकर आप ही भोजन करता है या जल पीता है, वह पितरों का द्रोही है । उसके पितर स्वर्ग में अन्न और जल नहीं पाते हैं । श्राद्ध द्वारा तृप्त किये हुए पितर मनुष्य को मनोवांछित भोग प्रदान करते हैं ।'

आनर्त-नरेश : 'ब्रह्मन् ! श्राद्ध के लिए और भी तो नाना प्रकार के पवित्रतम काल हैं, फिर अमावस्या को ही विशेषरूप से श्राद्ध करने की बात क्यों कही गयी है ?'

भर्तृयज्ञ : 'राजन् ! यह सत्य है कि श्राद्ध के योग्य और भी बहुत-से समय हैं । मन्वादि तिथि, युगादि तिथि, संक्रांतिकाल, व्यतीपात, चंद्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण - इन सभी समयों में पितरों की तृप्ति के लिए श्राद्ध करना चाहिए । पुण्य-तीर्थ, पुण्य-मंदिर, श्राद्धयोग्य ब्राह्मण तथा श्राद्धयोग्य उत्तम पदार्थ प्राप्त होने पर बुद्धिमान पुरुषों को बिना पर्व के भी श्राद्ध करना चाहिए । अमावस्या को विशेषरूप से श्राद्ध करने का आदेश दिया गया है, इसका कारण है कि सूर्य की सहस्रों किरणों में जो सबसे प्रमुख है उसका नाम 'अमा' है । उस 'अमा' नामक प्रधान किरण के तेज से ही सूर्यदेव तीनों लोकों को प्रकाशित करते हैं । उसी 'अमा' में तिथि विशेष को

चंद्रदेव निवास करते हैं, इसलिए उसका नाम अमावस्या है। यही कारण है कि अमावस्या प्रत्येक धर्मकार्य के लिए अक्षय फल देनेवाली बतायी गयी है। श्राद्धकर्म में तो इसका विशेष महत्त्व है ही।'

श्राद्ध की महिमा बताते हुए ब्रह्माजी ने कहा है : 'यदि मनुष्य पिता, पितामह और प्रपितामह के उद्देश्य से तथा मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामह के उद्देश्य से श्राद्ध-तर्पण करेंगे तो उतने से ही उनके पिता और माता से लेकर मुझ तक सभी पितर तृप्त हो जायेंगे।

जिस अन्न से मनुष्य अपने पितरों की तुष्टि के लिए श्रेष्ठ ब्राह्मणों को तृप्त करेगा और उसीसे भक्तिपूर्वक पितरों के निमित्त पिंडदान भी देगा, उससे पितरों को सनातन तृप्ति प्राप्त होगी।

पितृपक्ष में शाक के द्वारा भी जो पितरों का श्राद्ध नहीं करेगा वह धनहीन चाण्डाल होगा। ऐसे व्यक्ति से जो बैठना, सोना, खाना, पीना, छूना-छुआना अथवा वार्तालाप आदि व्यवहार करेंगे, वे भी महापापी माने जायेंगे। उनके यहाँ संतान की वृद्धि नहीं होगी। किसी प्रकार भी उन्हें सुख और धन-धान्य की प्राप्ति नहीं होगी।

यदि मनुष्य गया तीर्थ में जाकर एक बार भी श्राद्ध कर देंगे तो उसके प्रभाव से सभी पितर सदा के लिए तृप्त हो जायेंगे।'

राजन् ! ऐसा जानकर विज्ञपुरुष को चाहिए कि पितरों को तृप्त करने की इच्छा रखकर वह श्राद्ध के समय में श्राद्ध अवश्य करे।''

(टिप्पणी : 'गीता' के सातवें अध्याय का माहात्म्य पढ़कर पाठ किया जाय और फल पितरों को अर्पण किया जाय तो बड़ा पुण्य होता है। इस हेतु आश्रम से प्रकाशित 'श्रीमद्-भगवद्गीता' देखें। श्राद्ध की विधि आदि की संपूर्ण जानकारी आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'श्राद्ध-महिमा' में दी गयी है।) ❐

पवित्र बुद्धि का पवित्र विचार

(महात्मा गाँधी जयंती : २ अक्टूबर)

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

महात्मा गाँधीजी (मोहनदास) ने बचपन में राजा हरिश्चन्द्र का नाटक देखा और तभी से निश्चय कर लिया कि 'मैं हमेशा सत्य बोलूँगा।' एक बार मोहनदास की अपने भाई के साथ 'तू-तू, मैं-मैं' हो गयी। भाई ने मार दिया थप्पड़। बच्चे थे; रोते आये, माँ को फरियाद की मोहनदास ने कि ''मुझे भाई ने मारा है।''

माँ बोली : ''तू भी उसको मार।''

मोहनदास बोले : ''माँ ! तू ऐसी सीख देती है ! उसने मारकर एक गलती की और फिर मैं मेरे भाई को मारूँ, दूसरी गलती करूँ ?''

माँ ने गले लगाया और बोली : ''बेटा ! मैं तेरी परीक्षा ले रही थी। तू बुद्धिमान होगा और समाज को कुछ-न-कुछ ऐसा देगा कि समाज तुझे याद करेगा मेरे लाल !''

मोहनदास कितने विवेकवान, समवान धर्मात्मा थे, कैसे महात्मा थे और कितने जिज्ञासु थे कि बोले : 'उसने मुझे मारा, फिर मैं मारूँगा तो गलती एक से दो हो जायेगी, गलती बढ़ेगी ! ऐसा कोई उपाय बताओ कि दूसरी बार कोई मुझे मारे नहीं और मैं किसीके मारने से या धमकाने से डरूँ नहीं। अब दूसरी बार मुझे उसकी मार न खानी पड़े, ऐसा मैं करूँगा।'

यह है जिज्ञासा, यह है पवित्र माँ-बाप का आशीर्वाद और पवित्र बुद्धि का पवित्र विचार !

परमात्मस्वरूप सद्गुरु

अंतर हाथ सहारि दे, बाहर मारे चोट

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

शिष्य यदि मनमुख रहा और मन के कहने में ही चलता रहा तो वह कभी आगे नहीं बढ़ सकता। उसको गुरुमुख होना ही पड़ेगा लेकिन गुरु भी ऐसे-वैसे नहीं होने चाहिए। गुरु भी समर्थ होने चाहिए, जो उसको साधना में श्रेष्ठ मार्ग से आगे बढ़ा सकें। शिष्य की प्रकृति यदि ज्ञानमार्ग की है और गुरु उसको कुण्डलिनी योग ही कराते हैं या शिष्य की प्रकृति कुण्डलिनी योग की है और गुरु उसको ज्ञानयोग में ही घसीटते रहें तो इससे शिष्य का उत्थान नहीं हो पायेगा। इसीलिए कहा है कि गुरु श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ हों और शिष्य में संसार की विषय-वासना भोगने की कामना न हो, ईश्वरप्राप्ति की तीव्र तड़प हो तो काम तुरंत बन जाता है।

जो लोगों की निंदा-प्रशंसा-विरोध की परवाह नहीं करता, वही साधक-शिष्य इस रास्ते पर चल सकता है। अन्य लोग तो रास्ते में ही रुक जाते हैं। बिना अपने अहं को मिटाये तुम आत्मानंद का रसपान नहीं कर सकते। संसार के क्षणिक तुच्छ रस कुछ बनने पर मिल जाते होंगे, यह संभव है परंतु आत्मानंद का रस तो मिटने से ही मिलता है। संसार के रिश्ते और संबंध सदैव रहनेवाले नहीं हैं। ये सब शरीर के ही संबंध हैं किंतु क्या हम शरीर हैं ? यदि हम शरीर नहीं तो और क्या हैं ? क्या हम मन या बुद्धि हैं ? न हम शरीर हैं, न मन हैं और न बुद्धि हैं तो फिर हम कौन हैं, क्या हैं ? - ये सब साधक की साधना के मौलिक प्रश्न हैं। इनको यदि हल करना है और अपने-आपको जानकर सुख-दुःख, हर्ष-शोक, राग-द्वेष, संशय, द्वन्द्व, कामादिक विकारों से परे आत्मिक आनंद का अधिकारी बनना है तो इन सांसारिक संबंधों में अधिक नहीं उलझना। जीवन के लिए जितना लौकिक व्यवहार आवश्यक है, उतना व्यवहार करते हुए अपनी साधना को निर्विघ्न अपनी-अपनी जगह पर आगे बढ़ाते जाना बहुत जरूरी है। दस शब्द बोलने हैं तो छः में निपटाओ।

जब साधक दृढ़ निश्चय के साथ अपने साधना-पथ पर चल पड़ता है तो विघ्न भी अपने स्थान से चल पड़ते हैं साधक को भुलावा देने के लिए, उसे साधना-पथ से डिगाने के लिए। यहीं पर साधक को सचेत रहने की आवश्यकता है। इस समय ऐसे लोगों से बचें, ऐसे वातावरण से बचें तथा ऐसे आकर्षणों से बचें जो कि प्रत्यक्ष या परोक्ष पतन की ओर ले जा सकते हैं क्योंकि अभी साधना का बीज अंकुर ही बना है, अभी छोटा पौधा ही बन पाया है, अभी पेड़ नहीं बना है। सद्गुरु के प्रति शिष्य की श्रद्धा का धागा बड़ा महीन और नाजुक होता है। उसे सम्हालो, कहीं वह टूट न जाय।

श्रद्धा सदैव एक जैसी नहीं रहती। वह कटती-पिटती-टूटती रहती है। श्रद्धा को सम्हालो, वह बहुत मूल्यवान है। वही तुम्हें नर से नारायण बनानेवाली है। उसीके सहारे तुममें परमात्मा का आनंद प्रकटनेवाला है। जरा चूके कि फिसलते चले जाओगे क्योंकि फिसलानेवाले

बहुत हैं। पानी ढलान में बहना जानता है लेकिन उसको ऊपर चढ़ाने में बल की जरूरत होती है। साधक को ऊपर चढ़ना है। इसलिए साधक को बहुत सँभल-सँभलकर चलना होगा। जैसे - गर्भिणी स्त्री सँभल-सँभलकर कदम रखती है। स्त्री के उदर से तो नश्वर शरीर का जन्म होगा परंतु साधक को तो अपने हृदय में शाश्वत परमात्मा का अनुभव पाना है।

कई बार साधक की कसौटियाँ होंगी। गुरु उसे ठोक-बजाकर, तपा-तपाकर आगे बढ़ायेंगे। प्रभु से मिलन यह कोई जैसी-तैसी बात तो है नहीं। यह वह बात है कि जिसके आगे कोई बात नहीं है। यह वह प्राप्ति है, जिसके आगे कोई प्राप्ति नहीं है। यह वह करना है, जिसके आगे और कुछ करना-कोई कर्तव्य शेष ही नहीं बचता। यह वह पद है, जिसके आगे कोई पद नहीं है।

साधक को गीली मिट्टी जैसा बनना पड़ेगा। कुम्हार जैसे मिट्टी को रौंदता, कूटता, पीटता, थपेड़े मारता हुआ घड़ा बनाता है, उसे आग में तपाकर पक्का करता है, वैसे ही गुरु साधक के साथ भी करेंगे। यदि वह (साधक) मिट्टी नहीं बना, गुरु-आज्ञा में नहीं चला, उसने मनमानी की, प्रतिकार किया, यदि वह उनकी चोटों से घबरा गया, यदि वह हिम्मत हार गया तो... ! तो फिर वही संसार का नश्वर जीवन, वही जन्म-मृत्यु का चक्कर, वही सदियों पुराना सुख-दुःख का रोग, जिसको छोड़कर वह अमर पद की ओर बढ़ रहा था, उसे अपना लेने के लिए, उसे ग्रस लेने के लिए तैयार खड़ा है। तुम्हारे सामने दोनों विकल्प हैं या तो साधना के मार्ग पर डटकर चलते रहो और अपने आनंदमय आत्मपद को प्राप्त कर लो अथवा उसी नश्वर सुख की भ्रांतिवाले और दुःखों से भरे विषयी संसार में फिर से फँस जाओ। अब चुनाव तुमको करना है। संसार का मजा भी बिना सजा के नहीं मिलता। जड़ चीजों का सुख भी परिश्रम माँगता है। जो भी मजा चाहते हो उसकी सजा या तो पहले भुगत लो या बाद में। साधक को कठिनाइयाँ पहले भुगतनी पड़ती हैं परंतु वे कठिनाइयाँ उसे महाआनंद की ओर ले जाती हैं। आज तक हमने संसार में जो भी मजा लिया या सुख लिया वह तो हर्ष था सुख नहीं। हर्ष तो मन का विकार है। हर्ष आता है और चला जाता है। हर्ष परम सुख नहीं है। परम सुख आता-जाता नहीं, वह तो शाश्वत है।

बुद्धिमान साधक का लक्ष्य होना चाहिए परम सुख पाना। हमने विवेकपूर्वक परम सुख का मार्ग पकड़ा है, जो हमें नश्वर से शाश्वत की ओर ले जायेगा। यही सच्चा पथ है। बाकी सारे पथ माया में ले जाते हैं किंतु यह पथ माया से पार ले जाता है, जहाँ मान-अपमान, रोग, मोह, सुख-दुःख आदि की पहुँच नहीं है। इसी पथ पर हमें दृढ़तापूर्वक चलना है, चलते ही रहना है, बिना रुके, जब तक कि लक्ष्य की सिद्धि न हो जाय। ❑

✻ जब बुद्धि एवं हृदय एक हो जाते हैं तब सारा जीवन साधना बन जाता है।

✻ बुद्धिमान् पुरुष संसार की चिन्ता नहीं करते लेकिन अपनी मुक्ति के बारे में सोचते हैं। मुक्ति का विचार ही त्यागी, दानी, सेवापरायण बनाता है। मोक्ष की इच्छा से सब सद्गुण आ जाते हैं। संसार की इच्छा से सब दुर्गुण आ जाते हैं।

✻ हरेक साधक को बिल्कुल नये अनुभव की दिशा में आगे बढ़ना है। इसके लिये ब्रह्मज्ञानी महात्मा की अत्यन्त आवश्यकता होती है। जिसको सच्ची जिज्ञासा हो, उसे ऐसे महात्मा मिल ही जाते हैं। दृढ़ जिज्ञासा से शिष्य को गुरु के पास जाने की इच्छा होती है। योग्य जिज्ञासु को समर्थ गुरु स्वयं दर्शन देते हैं।

(आश्रम से प्रकाशित साहित्य 'जीवन रसायन' से)

उन्नति चाहो तो विनम्र बनो

अनेक विद्यालयों के सूचना-पट्ट पर ये शास्त्रवचन लिखे हुए होते हैं :

विद्या ददाति विनयम् । विद्या विनयेन शोभते ।

अर्थात् विद्या विनय प्रदान करती है और वह विनय से ही शोभित होती है ।

वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति जीवनरूपी पाठशाला का एक विद्यार्थी ही है और वह सतत इस पाठशाला में कुछ-न-कुछ सीखता ही रहता है । इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को इस शास्त्रवचन का आदर करना चाहिए और वह वास्तविक विद्या प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए जो विनय प्रदान करे और जीवन में अर्जित ज्ञान को सुशोभित करे ।

अहंकारी व्यक्ति कितना भी विद्यावान हो, वह शोभा नहीं पाता । इसलिए वेद भी हमें आज्ञा करते हैं : **पर्णाल्लघीयसी भव ।** 'हे मानव ! तू पत्ते से भी हलका बन अर्थात् नम्र बन ।'

(अथर्ववेद : १०.१.२९)

हमारा सबका अनुभव है कि जो नम्र बनता है, वह सभीका प्यारा हो जाता है क्योंकि नम्रता एक ऐसा सद्गुण है जो अन्य अनेक सद्गुणों और सम्पदाओं को खींच लाता है ।

शास्त्र कहते हैं :

सुशीलो भव धर्मात्मा मैत्रः प्राणिहिते रतः ।
निम्नं यथापः प्रवणाः पात्रमायान्ति सम्पदः ॥

'हे मनुष्य ! तू सुशील, पुण्यात्मा, प्रेमी और समस्त प्राणियों का हितैषी बन क्योंकि जैसे नीची भूमि की ओर लुढ़कता हुआ जल अपने-आप ही पात्र में आ जाता है, वैसे ही सत्पात्र, विनम्र मनुष्य के पास समस्त संपत्तियाँ स्वयं आ जाती हैं ।'

(विष्णु पुराण : १.११.२४)

जीवन में कोई ऊँची विद्या न हो तो भी पेट पालने की विद्या तो हर व्यक्ति के पास होती ही है । फिर **'विद्या ददाति विनयम् ।'** सूक्ति के अनुसार विश्व के सभी लोग विनयी होने चाहिए । परंतु देखा यह जाता है कि विनय का सद्गुण बहुत ही विरलों के पास होता है । फिर क्या यह शास्त्रवचन गलत है ? नहीं । शास्त्रकार यहाँ 'विद्या' शब्द के द्वारा आत्मविद्या की ओर संकेत करना चाहते हैं, जो हमारे तुच्छ अहं को दूर करने में सक्षम है । इसलिए हमें उसे पाने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए । भगवान श्रीकृष्ण 'गीता' में अर्जुन को आत्मविद्या का उपदेश दे रहे हैं और इन्हीं उपदेशों में विनम्र बनने का भी उपदेश आता है :

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥

'उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको भलीभाँति दण्डवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म-तत्त्व को भलीभाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे ।' **(गीता : ४.३४)**

भारतवर्ष के सम्राट राजा भर्तृहरि ने जब आत्मविद्या को पूर्णरूप से आत्मसात् किया और आत्मानंद में निमग्न हुए, तब उन्होंने लिखा :

जब स्वच्छ सत्संग कीन्हों, तभी कछु कछु चीह्नयो ।

जब स्वच्छ सत्संग किया, तभी कुछ-कुछ जाना । क्या जाना ?

मूढ़ जान्यो आपको, हर्यो भरम ताप को ॥

मुझ बेवकूफ को पता ही नहीं था कि मैं बड़ा

बेवकूफ था । अब भ्रम और ताप को मैंने मिटा दिया है ।

आत्मविद्या कितनी निरहंकारिता, कितनी विनम्रता प्रदान करती है !

वैसे तो सेल्समैनों में, वेटरों में भी बड़ी विनम्रता दिखती है परंतु वह ऊपर-ऊपर की है, अंदर से हृदय स्वार्थभाव से सना रहता है । वह विनम्रता भी अच्छी है परंतु सरल, निष्कपट, वास्तविक विनम्रता तो सीधे-अनसीधे अध्यात्म-विद्या का ही प्रसाद है ।

एक बार गाँधीजी एक स्थान पर वक्तव्य देने गये । वे अपने सादे वेश में थे । लोगों ने उन्हें सब्जी काटने व पानी लाने की आज्ञा दी । उन्होंने मुस्कराते हुए इन कार्यों को सम्पन्न किया ।

किसीको विनम्रता का प्रकटरूप देखना हो तो उसे पूज्य संत श्री आसारामजी बापू के दर्शन करने चाहिए। वे अपने सत्संग-कार्यक्रम के अंतिम सत्र में हाथ जोड़कर कहा करते हैं : ''सत्संग में जो अच्छा-अच्छा आपको सुनने को मिला वह तो मेरे गुरुदेव का, शास्त्रों का, महापुरुषों का प्रसाद था और कहीं कुछ खारा-खट्टा आ गया हो तो उसे मेरी ओर से आया मानकर क्षमा करना ।'' आत्मविद्या के सागर पूंज्यश्री की यह परम विनम्रता देखकर सत्संगियों की आँखों से अश्रुधाराएँ बरसने लगती हैं ।

समुद्र में अनेक नदियाँ आकर मिलती हैं परंतु वह शांत रहता है, उसमें बाढ़ नहीं आती । आप भी गंभीर और नम्र बनो । विद्या, धन, वैभव, उच्च पदवी, मान और सम्मान पाकर फूल मत जाओ, अपनी मर्यादा से बाहर मत हो जाओ । जो वृक्ष फलों से लद जाता है वह झुक जाता है, ऐसे ही जो व्यक्ति सच्ची विद्या को पा लेता है वह विनम्र हो ही जाता है । जो गागर नल के नीचे झुकने को तैयार होती है वही जल से पूर्ण हो जाती है । जो व्यक्ति विनम्रभाव से आत्मज्ञानी महापुरुषों के सत्संग में बैठता है वही ज्ञानसम्पन्न हो जाता है । विनम्रता से विद्या मिलती है और विद्या से पुनः विनम्रता पोषित होती है, यह नियम है । जो विनम्र है उसे न किसीसे भय होता है और न पतन की चिंता । जो विनम्र है उसका सर्वत्र आदर होता है । जो अभिमानी होता है उसका सर्वत्र तिरस्कार होता है । जिसके पेट में अभिमान की हवा भरी हुई है, उसको फुटबाल की तरह ठोकरें ही खानी पड़ती हैं । विनम्र व्यक्ति लोगों से आदर-सत्कार पाता है ।

नम्रता मानव-जीवन का भूषण है । नम्रता से मनुष्य के गुण सुवासित और सुशोभित हो उठते हैं । नम्रता विद्वान की विद्वत्ता में, धनवान के धन में, बलवान के बल में और सुरूप के रूप में चार चाँद लगा देती है । सच्चा बड़प्पन और सभ्यता भी नम्रता में ही है । हम किसीको छोटा न समझें ।

'यजुर्वेद' (१८.७५) में आता है :

उत्तानहस्ता नमसोपसद्य ।

जब दूसरों से मिलें तो दोनों हाथ उठाकर नमस्ते करें । ❐

हम व्यवहार में भी प्रत्यक्ष देखते हैं कि हम जिस पर प्रेम करते हैं उसकी किसी सामान्य वस्तु पर भी हमारा प्रेम हुआ करता है और उसे हम सिर पर रख लेते हैं । वह जिस स्थान पर रह चुका हो उस स्थान के प्रति भी हमें प्रेम हो जाता है । तब फिर जिस सद्गुरु के शरीर का आश्रय लेकर साक्षात् परमेश्वर हमारी पूजा ग्रहण करके हम पर कृपा करता है और हमारे सारे अज्ञान-मल को दूर करके हमें चिर शांति-सुख का अधिकारी बनाता है, उस शरीर के प्रति साक्षात् परमेश्वर के समान श्रद्धा-भक्ति रखने का उपदेश शास्त्रों ने दिया है तो इसमें आश्चर्यजनक कौन-सी बात है ?

लूट मची, खुशहाली छायी

एक धनी सेठ के सात बेटे थे। छः का विवाह हो चुका था। सातवीं बहू आयी, वह सत्संगी माँ-बाप की बेटी थी। बचपन से ही सत्संग में जाने से सत्संग के सुसंस्कार उसमें गहरे उतरे हुए थे। छोटी बहू ने देखा कि घर का सारा काम तो नौकर-चाकर करते हैं, जेठानियाँ केवल खाना बनाती हैं उसमें भी खटपट होती रहती है। बहू को सुसंस्कार मिले थे कि अपना काम स्वयं करना चाहिए और प्रेम से मिलजुलकर रहना चाहिए। अपना काम स्वयं करने से स्वास्थ्य बढ़िया रहता है।

उसने युक्ति खोज निकाली और सुबह जल्दी स्नान करके, शुद्ध वस्त्र पहनकर पहले ही रसोई में जा बैठी। जेठानियों ने टोका लेकिन फिर भी उसने बड़े प्रेम से रसोई बनायी और सबको प्रेम से भोजन कराया। सभी बड़े तृप्त व प्रसन्न हुए।

दिन में सास छोटी बहू के पास जाकर बोली : ''बहू ! तू सबसे छोटी है, तू रसोई क्यों बनाती है ? तेरी छः जेठानियाँ हैं।''

बहू : ''माँजी ! कोई भूखा अतिथि घर आ जाय तो उसको आप भोजन क्यों कराते हो ?''

''बहू ! शास्त्रों में लिखा है कि अतिथि भगवान का स्वरूप होता है। भोजन पाकर वह तृप्त होता है तो भोजन करानेवाले को बड़ा पुण्य मिलता है।''

''माँजी ! अतिथि को भोजन कराने से पुण्य होता है तो क्या घरवालों को भोजन कराने से पाप होता है ? अतिथि में भगवान का स्वरूप है तो घर के सभी लोग भी तो भगवान का स्वरूप हैं क्योंकि भगवान का निवास तो जीवमात्र में है। और माँजी ! अन्न आपका, बर्तन आपके, सब चीजें आपकी हैं, मैं जरा-सी मेहनत करके सबमें भगवद्भाव रखके रसोई बनाकर खिलाने की थोड़ी-सी सेवा कर लूँ तो मुझे पुण्य होगा कि नहीं होगा ? सब प्रेम से भोजन करके तृप्त होंगे, प्रसन्न होंगे तो कितना लाभ होगा ! इसलिए माँजी ! आप रसोई मुझे बनाने दो। कुछ मेहनत करूँगी तो स्वास्थ्य भी बढ़िया रहेगा।''

सास ने सोचा कि 'बहू बात तो ठीक कहती है। हम इसको सबसे छोटी समझते हैं पर इसकी बुद्धि सबसे अच्छी है।'

दूसरे दिन सास सुबह जल्दी स्नान करके रसोई बनाने बैठ गयी। बहुओं ने देखा तो बोलीं : ''माँजी ! आप परिश्रम क्यों करती हो ?''

सास बोली : ''तुम्हारी उम्र से मेरी उम्र ज्यादा है। मैं जल्दी मर जाऊँगी। मैं अभी पुण्य नहीं करूँगी तो फिर कब करूँगी ?''

बहुएँ बोलीं : ''माँजी ! इसमें पुण्य क्या है ? यह तो घर का काम है।''

सास बोली : ''घर का काम करने से पाप होता है क्या ? जब भूखे व्यक्तियों को, साधुओं को भोजन कराने से पुण्य होता है तो क्या घरवालों को भोजन कराने से पाप होता है ? सभीमें ईश्वर का वास है।''

सास की बातें सुनकर सब बहुओं को लगा कि 'इस बात का तो हमने कभी ख्याल ही नहीं किया। यह युक्ति बहुत बढ़िया है !' अब जो बहू पहले जग जाय वही रसोई बनाने बैठ जाय। पहले जो भाव था कि 'तू रसोई बना...' तो छः बारी बँधी थीं लेकिन अब 'मैं बनाऊँ, मैं बनाऊँ...'- यह भाव हुआ तो आठ बारी बँध

गयीं । दो और बढ़ गये सास और छोटी बहू । काम करने में 'तू कर, तू कर...' इससे काम बढ़ जाता है और आदमी कम हो जाते हैं पर 'मैं करूँ, मैं करूँ...' इससे काम हलका हो जाता है और आदमी बढ़ जाते हैं ।

छोटी बहू उत्साही थी, सोचा कि 'अब तो रोटी बनाने में चौथे दिन बारी आती है, और क्या किया जाय ?' घर में गेहूँ पीसने की चक्की पड़ी थी, उसने उससे गेहूँ पीसने शुरू कर दिये । मशीन की चक्की का आटा गरम-गरम बोरी में भर देने से जल जाता है, उसकी रोटी स्वादिष्ट नहीं होती लेकिन हाथ से पीसा गया आटा ठंडा और अधिक पौष्टिक होता है तथा उसकी रोटी भी स्वादिष्ट होती है । छोटी बहू ने गेहूँ पीसकर उसकी रोटी बनायी तो सब कहने लगे कि 'आज तो रोटी का जायका बड़ा विलक्षण है !'

सास बोली : ''बहू ! तू क्यों गेहूँ पीसती है ? अपने पास पैसों की कमी नहीं है ।''

''माँजी ! हाथ से गेहूँ पीसने से व्यायाम हो जाता है और बीमारी नहीं आती । दूसरा, रसोई बनाने से भी ज्यादा पुण्य गेहूँ पीसने का है ।''

सास और जेठानियों ने जब सुना तो लगा कि बहू ठीक कहती है । उन्होंने अपने-अपने पतियों से कहा : 'घर में चक्की ले आओ, हम सब गेहूँ पीसेंगी ।' रोजाना सभी जेठानियाँ चक्की में दो-ढाई सेर गेहूँ पीसने लगीं ।

अब छोटी बहू ने देखा कि घर में जूठे बर्तन माँजने के लिए नौकरानी आती है । अपने जूठे बर्तन हमें स्वयं साफ करने चाहिए क्योंकि सबमें ईश्वर है तो कोई हमारा जूठा क्यों साफ करे !

अगले दिन उसने सब बर्तन माँज दिये । सास बोली : ''बहू ! विचार तो कर, बर्तन माँजने से तेरा गहना घिस जायेगा, कपड़े खराब हो जायेंगे... ।''

''माँजी ! काम जितना छोटा, उतना ही उसका माहात्म्य ज्यादा । पांडवों के यज्ञ में भगवान श्रीकृष्ण ने जूठी पत्तलें उठाने का काम किया था ।''

दूसरे दिन सास बर्तन माँजने बैठ गयी । उसको देखके सब बहुओं ने बर्तन माँजने शुरू कर दिये ।

घर में झाड़ू लगाने नौकर आता था । अब छोटी बहू ने सुबह जल्दी उठकर झाड़ू लगा दी । सास ने पूछा : ''बहू ! झाड़ू तूने लगायी है ?''

''माँजी ! आप मत पूछिये । आपको बोलती हूँ तो मेरे हाथ से काम चला जाता है ।''

''झाड़ू लगाने का काम तो नौकर का है, तू क्यों लगाती है ?''

''माँजी ! 'रामायण' में आता है कि वन में बड़े-बड़े ऋषि-मुनि रहते थे लेकिन भगवान उनकी कुटिया में न जाकर पहले शबरी की कुटिया में गये । क्योंकि शबरी रोज रात में झाड़ू लगाती थी, पम्पासर का रास्ता साफ करती थी कि कहीं आते-जाते ऋषि-मुनियों के पैरों में कंकड़ न चुभ जायें ।''

सास ने देखा कि यह छोटी बहू तो सबको लूट लेगी क्योंकि यह सबका पुण्य अकेले ही ले लेती है । अब सास और सब बहुओं ने मिलके झाड़ू लगानी शुरू कर दी ।

जिस घर में आपस में प्रेम होता है वहाँ लक्ष्मी बढ़ती है और जहाँ कलह होता है वहाँ निर्धनता आती है । सेठ का तो धन दिनोंदिन बढ़ने लगा । उसने घर की सब स्त्रियों के लिए गहने और कपड़े बनवा दिये । अब छोटी बहू ससुर से मिले गहने लेकर बड़ी जेठानी के पास गयी और बोली : ''आपके बच्चे हैं, उनका विवाह करोगी तो गहने बनवाने पड़ेंगे । मेरे तो अभी कोई बच्चा है नहीं । इसलिए इन गहनों को आप रख लीजिये ।''

गहने जेठानी को देकर बहू ने कुछ पैसे और कपड़े नौकरों में बाँट दिये । सास ने देखा तो बोली : ''बहू ! यह तुम क्या करती हो ? तेरे

ससुर ने सबको गहने बनवाकर दिये हैं और तूने वे जेठानी को दे दिये और पैसे, कपड़े नौकरों में बाँट दिये !''

''माँजी ! मैं अकेले इतना संग्रह करके क्या करूँगी ? अपनी वस्तु किसी जरूरतमंद के काम आये तो आत्मिक संतोष मिलता है और दान करने का तो अमिट पुण्य होता ही है !''

सास को बहू की बात लग गयी। वह सेठ के पास जाकर बोली : ''मैं नौकरों में धोती-साड़ी बाँटूँगी और आस-पास में जो गरीब परिवार रहते हैं उनके बच्चों की फीस मैं स्वयं भरूँगी। अपने पास कितना धन है, किसीके काम आये तो अच्छा है। न जाने कब मौत आ जाय और सब यहीं पड़ा रह जाय ! जितना अपने हाथ से पुण्यकर्म हो जाय अच्छा है।''

सेठ बहुत प्रसन्न हुआ कि पहले नौकरों को कुछ देते थे तो लड़ पड़ती थी पर अब कहती है कि 'मैं खुद दूँगी।' सास दूसरों को वस्तुएँ देने लगी तो यह देखके दूसरी बहुएँ भी देने लगीं। नौकर भी खुश होके मन लगाके काम करने लगे और आस-पड़ोस में भी खुशहाली छा गयी।

'गीता' में आता है :

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

'श्रेष्ठ मनुष्य जो-जो आचरण करता है, दूसरे मनुष्य वैसा-वैसा ही करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, दूसरे मनुष्य उसीके अनुसार आचरण करते हैं।'

छोटी बहू ने जो आचरण किया उससे उसके घर का तो सुधार हुआ ही, साथ में पड़ोस पर भी अच्छा असर पड़ा, उनके घर भी सुधर गये। देने के भाव से आपस में प्रेम-भाईचारा बढ़ गया। इस तरह बहू को सत्संग से मिली सूझबूझ ने उसके घर के साथ अनेक घरों को खुशहाल कर दिया ! □

रोग-शमन के रहस्यमय साधन

रोग-उपचार के भी विविध उपाय हैं- शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक। व्यक्ति इन तीन संसारों का नागरिक है। आध्यात्मिक शक्तिसंपन्न व्यक्ति प्रत्येक स्तर के रोगों का उपचार कर सकता है किंतु जिस समय वह इसे अपना व्यवसाय बना लेता है, उसी समय उसकी संकल्पशक्ति क्षीण होकर मन बहिर्मुख हो जाता है।

विक्षिप्त तथा संसार में लिप्त मन किसी भी प्रकार का उपचार करने के योग्य नहीं है। स्वार्थ के आते ही मन और उसकी शक्ति का पतन हो जाता है। आध्यात्मिक शक्ति का दुरुपयोग साधक की इच्छाशक्ति को नष्ट कर देता है। महापुरुषों का कहना है कि सभी शक्तियाँ ईश्वर की अनुचरी हैं। वे हमें केवल साधन के रूप में प्राप्त हैं।

प्रत्येक मनुष्य को रोगों के उपचार की शक्ति प्राप्त है। सर्वरोगहारी शक्ति प्रत्येक मनुष्य के हृदय में प्रवाहित हो रही है। इच्छाशक्ति के सहयोग से इस रोगहारी शक्ति को व्यक्ति के व्याधिग्रस्त शरीर अथवा मन की ओर अभिमुख किया जा सकता है। यह रोगहारी शक्ति व्याधिग्रस्त व्यक्ति का उपचार करके उसे स्वास्थ्य प्रदान कर सकती है। स्वार्थरहित होना, प्रेम, इच्छाशक्ति तथा घट-घटवासी अविनाशी ईश्वर में अखंड भक्ति - यही रोग-शमन के रहस्यमय साधन हैं।

- श्री उड़िया बाबा
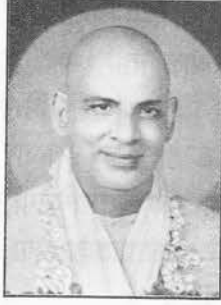
गुरुभक्तियोग की महत्ता

- ब्रह्मलीन स्वामी शिवानंदजी

जिस प्रकार शीघ्र ईश्वर-दर्शन के लिए कलियुग-साधना के रूप में कीर्तन-साधना है, उसी प्रकार इस संशय, नास्तिकता, अभिमान और अहंकार के युग में योग की एक नयी पद्धति यहाँ प्रस्तुत है - गुरुभक्तियोग । यह योग अद्‌भुत है । इसकी शक्ति असीम है । इसका प्रभाव अमोघ है । इसकी महत्ता अवर्णनीय है । **इस युग के लिए उपयोगी इस विशेष योग-पद्धति के द्वारा आप इस हाड़-चाम के पार्थिव देह में रहते हुए ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन कर सकते हैं । इसी जीवन में आप उन्हें अपने साथ विचरण करते हुए निहार सकते हैं ।**

साधना का बड़ा दुश्मन रजोगुणी अहंकार है । अभिमान को निर्मूल करने के लिए एवं विषमय अहंकार को पिघलाने के लिए गुरुभक्तियोग सर्वोत्तम साधनमार्ग है । जिस प्रकार किसी रोग के विषाणु निर्मूल करने के लिए कोई विशेष प्रकार की जंतुनाशक दवाई आवश्यक है, उसी प्रकार अविद्या, अहंकार और दुःख-दोषों को मिटाने के लिए गुरुभक्तियोग सबसे अधिक प्रभावशाली, अमूल्य और निश्चित प्रकार का उपचार है । वह सबसे अधिक प्रभावशाली दुःख-दोष और अहंकार नाशक है । गुरुभक्तियोग की भावना में जो सद्‌भागी शिष्य निष्ठापूर्वक सराबोर होते हैं, उन पर माया और अहंकार के रोग का कोई असर नहीं होता । इस योग का आश्रय लेनेवाला व्यक्ति सचमुच भाग्यशाली है क्योंकि वह योग के अन्य प्रकारों में भी सर्वोच्च सफलता हासिल करेगा । उसको कर्म, भक्ति, ध्यान और ज्ञानयोग के फल पूर्णतः प्राप्त होंगे । गुरुप्रीति और गुरुआज्ञा से भरा दिल सहज में ही सफलता पाता है ।

इस योग में संलग्न होने के लिए तीन गुणों की आवश्यकता है : निष्ठा, श्रद्धा और आज्ञापालन । पूर्णता के ध्येय में सन्निष्ठ रहो । संशयी और ढीले-ढाले मत रहना । अपने स्वीकृत गुरु में सम्पूर्ण श्रद्धा रखो । अपने मन में संशय की छाया को भी फटकने मत देना । एक बार गुरु में सम्पूर्ण श्रद्धा दृढ़ कर लेने के बाद आप समझने लगेंगे कि उनका उपदेश आपकी श्रेष्ठ भलाई के लिए ही होता है । अतः उनके शब्द का अंतःकरणपूर्वक पालन करो । उनके उपदेश का अक्षरशः अनुसरण करो । आप हृदयपूर्वक इस प्रकार करेंगे तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आप पूर्णता को प्राप्त करेंगे ही । मैं पुनः दृढ़तापूर्वक विश्वास दिलाता हूँ । ❐

व्यर्थ के संकल्पों से बचने की कुंजी

व्यर्थ के संकल्प न करें । व्यर्थ के संकल्पों से बचने के लिए 'हरि ॐ...' के गुंजन का भी प्रयोग किया जा सकता है । 'हरि ॐ...' के गुंजन में एक विलक्षण विशेषता है कि उससे फालतू संकल्प-विकल्पों की भीड़ कम हो जाती है । ध्यान के समय भी 'हरि ॐ...' का गुंजन करें फिर शांत हो जायें । मन इधर-उधर भागे तो फिर गुंजन करें । यह व्यर्थ संकल्पों को हटायेगा एवं महा संकल्प (परमात्मप्राप्ति) की पूर्ति में मददरूप होगा ।

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'जीवनोपयोगी कुंजियाँ' से)

आदर तथा अनादर...

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

दुर्लभो मानुषो देहो देहीनां क्षणभंगुरः ।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुण्ठप्रियदर्शनम् ॥

'मनुष्य-देह मिलना दुर्लभ है। वह मिल जाय फिर भी वह क्षणभंगुर है। ऐसी क्षणभंगुर मनुष्य-देह में भी भगवान के प्रिय संतजनों का दर्शन तो उससे भी अधिक दुर्लभ है।'

यह शरीर, जो पहले नहीं था और मरने के बाद नहीं रहेगा, उसीके मान-सम्मान में अपने वास्तविक स्वरूप को भूलकर जीवन व्यर्थ में खो देना बुद्धिमानी नहीं है । जहाँ जरा-सा आदर मिला वहाँ चक्कर काटते हैं । उद्घाटन समारोहों में फीता काटते फिरते हैं कि मान मिलेगा, अखबार में नाम आयेगा । अरे ! उन फीता काटनेवालों को ब्रह्मज्ञानी गुरुओं के पास जाना चाहिए और फीता काटने का शौक कम करना चाहिए। मस्का पालिश करनेवाले दस-बीस-पचास आदमी तुम्हारा जयघोष कर देंगे, लाख आदमी जयघोष कर देंगे तो क्या हो जायेगा ? अधिक वाहवाही के गुलाम हो जाओगे तो अनर्थ कर लोगे, चापलूसों के चक्कर में आकर अन्याय कर बैठोगे ।

नहीं-नहीं, आदर करवाके अपने शरीर में अहं मत लाओ और अनादर के भय से अपनी साधना और ईश्वरप्राप्ति का मार्ग मत छोड़ो । ये सब धोखा देनेवाले हैं, इनसे सावधान हो जाओ ! आदर हो गया, अनादर हो गया, स्तुति हो गयी, निंदा हो गयी... कोई बात नहीं, हम तो करोड़ काम छोड़कर प्रभु को पायेंगे । बस, फिर तो प्रभु तुम्हारे हृदय में प्रकट होने का इंतजार करेंगे । पहले तो तुम्हारा शोक और चिंता मिटेगी, फरियाद मिटेगी फिर धीरे-धीरे अंदर प्रकाश होगा, कई रहस्य प्रकट होने लगेंगे ।

लोग ईश्वरप्राप्ति के लिए वेश बदल लेते हैं लेकिन मान मिलता है तो फिर मान के ऐसे आदी हो जाते हैं कि देखते रहते हैं कहीं हमारे मान में कमी तो नहीं हुई !... तो मान के गुलाम हुए तो काहे की समझदारी रही ?

मान पुड़ी है जहर की, खाये सो मर जाय ।
चाह उसीकी राखता, वह भी अति दुःख पाय ॥
आदर तथा अनादर, वचन बुरे त्यों भले ।
निंदा स्तुति जगत की, धर जूते के तले ॥

मान चाहनेवाला भगवान का भक्त नहीं रहता, वह तो मान का भक्त हो जाता है । लोग मान दें साधु के नाते, भगवान के नाते लेकिन आप अमानी रहो, आप मान-अपमान के भोगी नहीं बनो । क्या करना है मान पाके, सहज में जीवन जियो ।

'ईश्वर मान-मरतबा, इज्जत-आबरू बनाये रखे... मेरी इज्जत बनी रहे...' अरे, पानी की बूँद से तो तेरी यात्रा शुरू हुई थी बुद्धू ! और मुट्ठी भर राख में तू समाप्त हो जायेगा । साधु-संन्यासी है तो गाड़ देंगे, जीवाणु बन जायेंगे, जंतु बन जायेंगे; जला देंगे तो राख बन जायेगी । क्यों अभिमान करना ? न साधुताई का अभिमान, न सेठपने का अभिमान, न नेतापने का अभिमान, न धनी होने का अभिमान करो; अगर अभिमान करना ही है तो एक ही अभिमान करो जो तारनेवाला है : 'मैं भगवान का हूँ और भगवान मेरे हैं । मैं भगवान की जाति का हूँ । हम हैं

अपने-आप हर परिस्थिति के बाप !' यह अभिमान तारनेवाला है। शरीर का नाम, इज्जत-आबरू ये सब फँसानेवाले हैं।

मत कर रे भाया गरव गुमान
गुलाबी रंग उड़ी जावेलो।
उड़ी जावेलो रे, फीको पड़ी जावेलो
रे, काले मर जावेलो...
धन रे दौलत थारा माल खजाना रे...
छोड़ी जावेलो रे पलमां उड़ी जावेलो ॥
पाछो नहीं आवेलो... मत कर रे गरव...

'यह धन मेरा, मैं धनवान।' धन को पता ही नहीं कि मैं इसका हूँ। 'यह मकान मेरा, मैं मकानवाला', 'यह खेत मेरा, मैं खेतवाला', 'यह पैसा मेरा, मैं पैसेवाला', 'ये गहने-गाँठे मेरे, मैं गहने-गाँठोंवाली' लेकिन माई ! देवि ! ये इतने बेवफा हैं कि तेरे को पहचानते ही नहीं हैं। इनको कोई उठाकर ले जाय तो बोलेंगे भी नहीं कि 'मौसी ! हम जा रहे हैं। बाय-बाय ! टाटा !...' कुछ नहीं करेंगे। ये बड़े बेवफा हैं। इनकी चिंता या चिंतन करके फँस मरने के लिए तुम्हारा जन्म नहीं हुआ है। तुम्हारा जन्म तो महान परमात्मा का ज्ञान पाकर महान बनने के लिए हुआ है। उस लक्ष्य को अगर पाना है, महान बनना है, अपने स्वरूप को जानना है तो

आदर तथा अनादर, वचन बुरे त्यों भले।
निंदा स्तुति जगत की, धर जूते के तले ॥

खुशामदखोर स्तुति करके तुमसे गलत न करवा लें अथवा कोई अखबारें पैसा दबाकर तुम्हारी निंदा लिख दें तो डरो मत। अंग्रेजों के पिट्ठू गाँधीजी की कितनी निंदा करते थे, फिर भी गाँधीजी डटे रहे। देशवासी गाँधीजी की सराहना करते थे, फिर भी वे अभिमान में कभी चूर नहीं हुए। स्तुति करनेवाले की अपनी सज्जनता है, भगवान की लीला है; निंदा करनेवाले का अपना नजरिया है ! न निंदा में सिकुड़ो न स्तुति से फूलो, भगवान को सामने रखो, अपने लक्ष्य को सामने रखो।

जिनको काम बनवाना होगा वे तो स्तुति कर लेंगे, खुशामद कर लेंगे; आप उनके प्रलोभन में न आइये, सावधान रहिये, अपना कर्तव्य करते जाइये। इससे आप स्तुति के योग्य रह जायेंगे। स्तुति में फिसले तो स्तुति नहीं टिकेगी।

निंदा से भिड़े तो निंदा बनी रहेगी, निंदनीय काम किये तो निंदा बनी रहेगी लेकिन सत्य के लिए निंदा-स्तुति को पैरों तले दबा दिया तो सत्य आपके हृदय में जगमग-जगमग प्रकाशित होगा। फिर आपकी कोई निंदा करे तो आपको परवाह नहीं, उसकी मति कुदरत मार देगी। कई लोग पैसे देकर अखबारों में क्या-का-क्या लिखवाते हैं, अपने पैसे नष्ट करते हैं और अपनी आबरू भी गँवाते हैं। मेरे सत्संग में तो लोगों की संख्या बढ़ रही है। भीड़ कम भी हो जाय तो मेरे को क्या लेना है उससे !

तो आप निंदनीय कार्य नहीं करते फिर भी कोई निंदा करता है और आप अपनी महिमा में मस्त रहते हैं तो निंदा करनेवाले को भगवान सद्बुद्धि देंगे। अगर सद्बुद्धि ली तो ठीक है, नहीं तो फिर प्रकृति की खूब मार पड़ती है, प्रकृति घुमा-घुमाकर प्रहार करती है।

एक आदमी था। वह जरा बोला : 'यह ऐसा क्या है ?' फिर थोड़ा और जोरों से निंदा करने लगा। फिर प्रकृति ने ऐसा घुमा-घुमाकर दिया कि दुर्घटना में लँगड़ा हो गया। फिर उसे कुछ स्वप्न आया, अब तो वह समिति में सेवा करता है बेचारा। तो आप अपनी तरफ से किसीका अहित नहीं सोचो, किसीकी निंदा न करो। आप भगवान के लिए सत्कर्म में लगे रहो तो बाकी सब भगवान देख लेते हैं। ❐

मधुमेह : सुरक्षा व उपाय

वर्तमान में भारत देश में ढाई करोड़ से अधिक लोग मधुमेह से ग्रस्त हैं। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' के अनुसार आगामी २० वर्षों में यह संख्या दुगनी हो जायेगी। मधुमेह का इतनी तेज गति से बढ़ने का कारण आधुनिक खान-पान, शारीरिक परिश्रम का अभाव, मानसिक तनाव व चिंता है।

मधुमेह में शरीर की सप्तधातुएँ, तीनों दोष व ओज विकृत हो जाते हैं, जिससे शरीर निस्सार व दुर्बल होने लगता है। शरीर में सूक्ष्म मल (क्लेद) का संचय होने लगता है। परिणामतः गुर्दे (किडनी), हृदय, हड्डी व नेत्र से संबंधित रोग एवं अन्य अनेक जटिल उपद्रव उत्पन्न होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

कारण : सुखपूर्वक बैठे रहना व सोना, दही, दूध व दूध से बनी चीजें, गुड़ व चीनीयुक्त पदार्थों का अति सेवन, मांसाहार, नवीन धान्य, नवीन जल (वर्षा का जल), सभी कफवर्धक पदार्थ व आनुवंशिकता से मधुमेह उत्पन्न होता है।

सुरक्षात्मक उपाय : औषधि-सेवन से भी पथ्य-पालन व व्यायाम विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। सूर्योदय से पूर्व ४-५ कि.मी. तेजी से चलना मधुमेह-पीड़ितों के लिए सर्वोत्कृष्ट व्यायाम है। दिन भर भी चलना-फिरना चाहिए। आसन, विशेषतः सूर्यनमस्कार, भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन व सर्वांगासन तथा प्राणायाम नियमित करें। भोजन निश्चित समय पर लें। दिन में सोने से शर्करा बढ़ती है, अतः दिन का शयन त्याग दें।

पथ्य-अपथ्य : दही, भैंस का दूध, फल, मिठाई, नये चावल आदि कफवर्धक पदार्थों का सेवन न करें। जौ, गेहूँ, पुराने चावल, मूँग, चना, कुलथी, अलसी का तेल, गाय का घी, मेथी, बथुआ, तुरई, लौकी, कम मात्रा में अंगूर, किशमिश, बादाम ले सकते हैं। एक बादाम रात को भिगोकर सुबह छिलका उतारकर खूब चबाके खाना मधुमेह-पीड़ितों के लिए हितकारी है। बिल्वपत्र, नीमपत्र, आँवला, हल्दी, करेला, जामुन व मेथीदाना विशेष लाभदायी हैं।

औषध-चिकित्सा :

१. त्रिफला चूर्ण का नियमित सेवन करें।

२. आँवले के रस में हल्दी व शुद्ध शहद मिलाकर लें अथवा १ ग्राम हल्दी व २ ग्राम आँवला चूर्ण मिलाकर लें।

३. सुबह १० से २० मि.ली. बिल्वपत्र का रस व उतना ही करेले का रस लेना बहुत गुणकारी है।

४. मेथीदाना रात भर भिगोके सुबह छाया में सुखाकर पीसके रखें। १-१ चम्मच सुबह-शाम लें।

५. ८० ग्राम गुड़मार, ६० ग्राम बेल के सूखे पत्ते, ४० ग्राम जामुन की गुठली, ४० ग्राम बिलोने की मिंगी व २० ग्राम नीम की सूखी पत्तियाँ कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। ३ से ५ ग्राम यह चूर्ण सुबह-शाम लेने से शर्करा नियंत्रित रहती है।

६. औषधि-कल्पों में वसंतकुसुमाकर रस, रजतमालिनी वसंत, चंद्रप्रभा वटी, आरोग्यवर्धिनी वटी बल व ओजवर्धनार्थ बहुत उपयोगी हैं।

चमत्कारी प्रयोग : सुबह आधा किलो करेले काटकर एक चौड़े बर्तन में रखके उन्हें पैरों से कुचलें। जब करेलों का कड़वापन मुँह में आ जाय (जीभ में कड़वाहट का एहसास हो) तब कुचलना छोड़ दें। यह प्रयोग दस दिन तक करें। इससे मधुमेह नियंत्रित हो जायेगा। आवश्यक हो तो यह प्रयोग दस दिन बाद पुनः दोहरा सकते हैं। ❑

मृत माँ को दिया जीवनदाना

३ अप्रैल २००९ को मेरी माँ, जिनकी उम्र ५४ वर्ष है, को शरीर के बायें भाग में लकवा मार गया था। चेन्नई, जमशेदपुर आदि कई जगहों पर उनका बहुत इलाज कराया पर कुछ लाभ नहीं हुआ।

इलाज के दौरान १३ अप्रैल को डॉक्टरों ने तो जवाब दे दिया कि अब माताजी ठीक नहीं होंगी और कुछ ही घंटों की मेहमान हैं। हम सब बहुत घबरा गये। 'टाटा स्टील फैक्ट्री' की सबसे बड़ी डॉक्टर राहुल राय ने तो माँ को मृत घोषित कर अपने लेटर पैड पर लिखकर दे दिया था कि ये मर चुकी हैं। वह कागज आज भी मेरे पास है।

मैंने पूज्य बापूजी से सन् २००१ में दीक्षा ली थी। मुझे माँ की ऐसी दुरवस्था में मृत्यु से बहुत ही छटपटाहट हुई। मैंने श्रद्धापूर्वक पूज्य बापूजी से प्रार्थना की और अपनी माँ के सिरहाने बापूजी का एक फोटो रख दिया। तीन दिन तक हम माँ के मृत शरीर को रखे बापूजी से प्रार्थना करते रहे। तीसरे दिन रात को १.३० बजे माँ के शरीर में चेतना पुनः लौट आयी और माँ अचानक जीवित हो गयी ! यह देखकर हम दंग रह गये।

तब मुझे 'श्री आसारामायण' की यह पंक्ति याद आयी -

मृत गाय दिया जीवनदाना,
तब से लोगों ने पहचाना।

जिन बापूजी ने मृत गाय को जीवनदान दिया था यह उन्हींकी करुणा-कृपा है।

हमने माँ के जीवित होने की बात जब उन डॉक्टरों को बतायी, जिन्होंने 'ये मर चुकी हैं !' ऐसा लिखित में दे दिया था, तो वे आश्चर्यचकित हो गये और तुरंत ही अपने लेटर पैड पर लिखा हुआ वह वाक्य काट दिया और बोले : 'हमें भी पूज्य बापूजी का लॉकेट दीजिये।' फिर मुझे यह पंक्ति स्फुरित हुई :

मृत माँ को दिया जीवनदाना,
तब डॉक्टरों ने अचरज माना।

इस घटना को ४ महीने हो गये, मेरी माँ अब एकदम स्वस्थ हैं, कोई तकलीफ नहीं है। यह सब मेरे बापूजी की कृपा से ही हुआ है। ब्रह्मज्ञानी गुरु की शक्ति का, उनके सामर्थ्य का वर्णन कौन कर सकता है ! **- सोनिया, जमशेदपुर (झारखण्ड)।**

फोन : (०६५७) ६५४०९२७. ❐

श्रद्धा की रक्षा एवं संवर्धन

श्रद्धा मन का विषय है और मन चंचल है। मनुष्य जब सत्त्वगुण में होता है तब श्रद्धा पुष्ट होती है।

सत्त्वगुण बढ़ता है सात्त्विक आहार-विहार से, सात्त्विक वातावरण में रहने से एवं सत्संग सुनने से। मनुष्य जब रजो-तमोगुणी जीवन जीता है तो मति नीचे के केन्द्रों में, हलके केन्द्रों में पहुँच जाती है। मति जब नीचे चली जाती है तब लगता है कि झूठ बोलने में, कपट करने में सार है, कोर्ट-कचहरी जाना चाहिए... आदि-आदि।

श्रद्धा बनी रहे उसके लिए क्या करना चाहिए ?

अपनी श्रद्धा, स्वास्थ्य और सूझबूझ को बुलंद बनाये रखने एवं विकसित करने के लिए अपना आहार शुद्ध रखें। यदि असात्त्विक आहार के कारण मन में जरा भी मलिनता आती है तो श्रद्धा घटने लगती है। अतः श्रद्धा को बनाये रखने के लिए आहार-शुद्धि का ध्यान रखें।

पवित्र संग करें, सत्संग में जायें एवं पवित्र ग्रंथों का अध्ययन करें।

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'जीवनोपयोगी कुंजियाँ' से)

(‘ऋषि प्रसाद’ प्रतिनिधि)

१८ व १९ जुलाई को **मालपुरा (राज.)** में पूज्य बापूजी का सत्संग हुआ । पूज्यश्री बोले : ''संसार में तो पग-पग पर खड्डे हैं । धन का अहंकार भी एक खड्डा है, पद और प्रतिष्ठा का अहंकार भी एक खड्डा है, विद्वान होने का अहंकार भी खड्डा है और 'मैं गरीब हूँ' यह भी एक खड्डा है । एक खड्डे से निकलकर दूसरे खड्डे में और दूसरे खड्डे से निकलकर तीसरे खड्डे में गिरके जीव खदबदाके मर रहे हैं । जब तक भगवान की भक्ति नहीं मिली, तब तक एक मुसीबत से दूसरी मुसीबत आती रहती है लेकिन जब सर्वसमर्थ और सर्वप्रियता से भरी भगवान की प्रेमाभक्ति मिलती है तो वे खड्डे खड्डे नहीं रहते, रसमय सरोवर बन जाते हैं । अंतःकरण के ये खड्डे भक्तिरस से, जप-ध्यान के रस से, प्रेमरस से भर जाते हैं ।''

१९ जुलाई की **शाम टोंकवासियों** के नाम रही और सत्संग-रस में सराबोर हो गयी टोंक की जनता । इसी दौरान पूज्य बापूजी ने निवाई स्थित गौशाला को भी भेंट दी ।

२२ से २५ जुलाई तक बापूजी **डुंगरिया (पुष्कर) आश्रम** में एकांत में रहे । सत्संग में साधकों को समझाते हुए बापूजी बोले : ''कुछ लोग इष्ट का, इष्टमंत्र का फायदा लेकर संसारी चीजों को पाने का प्रयास करते हैं, वे वहीं ठुस्स हो जाते हैं । जो समझदार लोग हैं वे इष्ट से इष्ट का ही फायदा लेते हैं, आत्मा-परमात्मा से परमात्मा को ही चाहते हैं तो उनको तो परम लाभ हो जाता है ।

जितना हम निष्काम होते हैं, निःस्वार्थ होते हैं, गुरुप्रेमी, प्रभुप्रेमी होते हैं, उतना ही हमारी बुद्धि में गुरु का, प्रभु का प्रसाद विकसित होता है । महापुरुष तो वही-के-वही होते हैं लेकिन जिसमें जितनी श्रद्धा-तत्परता उसको उतना फायदा होता है । गंगाजी तो वही-की-वही लेकिन जिसका जितना बड़ा और मजबूत पात्र वह उतना अधिक गंगाजल भर पाता है ।''

२६ जुलाई को **जयपुर** में घोषित १ सत्र का सत्संग जयपुरवासियों के लिए मानो सौगात रही । बड़ी संख्या में जयपुर की जनता ने यहाँ उपस्थिति दर्ज करायी ।

२७ जुलाई को पूज्यश्री का चण्डीगढ़ आश्रम में आगमन हुआ । **३१ जुलाई** को **चण्डीगढ़** में पूज्यश्री ने अपने साधकों को महापुरुषों की महानता का राज बताते हुए कहा : ''आत्मा में अद्भुत सामर्थ्य है, अद्भुत सुख है, अद्भुत ज्ञान है और जो आत्मा-परमात्मा भगवान नारायण का है, कृष्ण का है, गुरु नानकजी का है वही आत्मा-परमात्मा तुम्हारा-हमारा है लेकिन उन्होंने उसमें बुद्धि शांत की है इसीलिए इतने महान हो गये और आप लोग आत्मा-परमात्मा की सत्ता लेकर बाहर भटक गये इसलिए थक गये, परेशान हो गये।''

१ व २ अगस्त को **मोहाली (पंजाब)** की सत्संगप्रिय जनता पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग हेतु उमड़ पड़ी । पंजाब की इस वीरधरा पर आयोजित संत-सम्मेलन में पूज्य बापूजी के नेतृत्व में एकत्रित संतों ने संस्कृति-जागरण का शंखनाद करते हुए संस्कृति के रक्षण-संवर्धन हेतु अपने विचार प्रकट किये ।

४ व ५ अगस्त को **नोएडा** में पूनम दर्शनार्थी व दिल्ली के आस-पास की जनता बड़ी संख्या में उमड़ पड़ी । रक्षाबंधन के इस अवसर

पर साधकों ने अपने परम सुहृद सद्गुरु के प्रति अपनी प्रीति के बंधन को दृढ़ किया।

५ व ६ अगस्त को **अमदावाद** में पूनम दर्शन-सत्संग हुआ। नोएडा में दिये पूनम दर्शन के बावजूद भी यहाँ बड़ी संख्या में भक्तों का ताँता लगा रहा।

६ व ७ अगस्त को **उदयपुर (राज.)** में अपने प्यारे बापूजी को पाकर उदयपुरवासी खिल उठे थे। यहाँ पूज्य बापूजी ने भारतीय संस्कृति के इतिहास को याद कराते हुए कहा : ''इस हिन्दू संस्कृति पर न जाने कितने-कितने जोर-जुल्म हुए, धर्मान्तरणवालों ने हमारे समाज को कितना-कितना गुमराह किया, तलवार के बल से हमको कितना तोड़ा गया और हमसे कितना छीना गया फिर भी अभी विश्व में अगर शांति देने की ताकत और भगवान को साकार रूप में प्रकट करने की ताकत है तो भारतीय संस्कृति में है, और किसीमें नहीं है।''

८ व ९ अगस्त को बलिदान की भूमि **चित्तौड़गढ़** में हुए सत्संग में जीवन का दार्शनिक तत्त्व समझाते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''खान-पान में सावधान रहो, सोच-विचार में सावधान रहो और अपना उद्देश्य ऊँचा कर दो। दुःख आये तो दुःख के भोगी न बनो, सुख आये तो सुख के भोगी न बनो। जो सुख का भोगी बनता है वह विलासी, खोखला और मनोबल से कमजोर हो जाता है। जो दुःख का भोगी बनता है वह डरपोक हो जाता है। दुःख आया है तो संयमी, त्यागी, सतर्क, सावधान और अनासक्त बनाने आया है। दुःख आया है तो उसके कारणों को खोजो, दुःख का कारण दूसरों को मानकर दोषारोपण न करो। आप विवेक-वैराग्य बढ़ाओ और भगवान की प्रीति से, स्मृति से दुःख का सदुपयोग करो। सुख आया है तो भगवद्-जनों की सेवा में और भगवान की प्रसन्नता में लगाओ।''

९ अगस्त का एक सत्र **भीलवाड़ावासियों** के भाग्य में रहा।

१० अगस्त को **प्रतापगढ़ (राज.)** में सत्संग व विशाल भंडारा हुआ। यहाँ गरीब-गुरबों को भोजन-प्रसाद वितरित किया गया तथा मिठाई, बर्तन, वस्त्र, चप्पलें आदि जीवनावश्यक चीजों के साथ नकद रुपये भी दिये गये। इसके अलावा दारिद्र्य मिटाने के लिए आधिदैविक उपाय बताकर आध्यात्मिक विकास की कुंजियाँ भी पूज्य बापूजी ने दीं।

११ व १२ अगस्त को **बाँसवाड़ा (राज.)** में हुए सत्संग-कार्यक्रम में सत्संगियों को सुख-दुःख में सम रहने की सीख देते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''धरती के सभी मनुष्य, केवल हिन्दुस्तानी नहीं, सवा पाँच सौ करोड़ मनुष्य मच्छर नहीं चाहते हैं। मच्छरों को भगाने में, मारने में अपनी सारी बुद्धि, शक्ति, धन, बहुत कुछ लगा चुके हैं और लगा रहे हैं लेकिन धरती से मच्छर नहीं मिटे और मिटेंगे भी नहीं। ऐसे ही दुःख मिटाने के लिए सभी लोग लगे हैं लेकिन दुःख किसीका भी सदा के लिए मिटा नहीं। दुःख आये ही नहीं यह तो संभव नहीं है। सुख भी आयेगा, दुःख भी आयेगा। आप तो सुख-दुःख के सदुपयोग की कला सीख लो।''

१२ अगस्त की दोपहर को **गांगड़ तलाई (राज.)** के अति गरीब आदिवासी क्षेत्र में पूज्य बापूजी व उनके साधक-सेवकों द्वारा आयोजित हुए विशाल भंडारे में दरिद्रनारायणों ने भोजन-प्रसाद के साथ सत्संग-प्रसाद भी पाया। आदिवासी और गरीब लोगों को मिठाई, बर्तन, वस्त्र आदि घरेलू इस्तेमाल की चीजें तथा नकद रुपये भी दिये गये। यहाँ की गरीब जनता ने पूज्य बापूजी से जब बारिश कम होने की समस्या बतायी तो पूज्यश्री ने सभीसे प्रार्थना करवाकर 'हरि ॐ' का जप करवाया और तुरंत ही बारिश

की बूँदों ने अपनी हाजिरी भी लगा दी । जैसे ही भंडारा समाप्त हुआ, गांगड़ तलाई की धरा को मेघराज ने यथेच्छ स्नान कराया । यहाँ की जनता यह दृश्य देखकर गद्‌गद हो गयी ।

१२ अगस्त की **शाम** को **फतेपुरा (गुज.)** में नवनिर्मित सत्संग-भवन के उद्‌घाटन के अवसर पर पूज्यश्री के सत्संग का लाभ फतेपुरावासियों को मिला ।

१३ अगस्त का एक सत्र **गोधरा (गुज.)** की जनता के नाम रहा ।

१४ से १६ अगस्त तक आनंद, प्रेम, माधुर्य लुटानेवाला जन्माष्टमी महोत्सव **सूरत** में आयोजित हुआ । साधकों को साधना में पूर्णता का मार्ग दिखाते हुए पूर्ण सद्‌गुरुदेव ने भगवान कृष्ण के पूर्णावतार पर प्रकाश डालते हुए अपने पूर्ण 'स्व' में प्रतिष्ठित होने की कुंजी बतायी ।

पूज्य बापूजी बोले : ''जन्माष्टमी का व्रत-उपवास करनेवाले लोगों के जीवन में दृढ़ता आती है । जिसके जीवन में दृढ़ता है उसके जीवन में अपने पर, शास्त्र पर, भगवान पर, गुरु पर श्रद्धा भी अडिग होती है । जिसके जीवन में व्रत-नियम नहीं है उसके जीवन में दृढ़ता नहीं होती और जिसके जीवन में व्रत और दृढ़ता नहीं होती, उसको संशय और चंचलता तिनके की नाईं हिलाती-डुलाती रहती है । वह जीवन में 'स्व' में प्रतिष्ठित नहीं हो सकेगा ।''

१६ अगस्त को पूज्यश्री का **उज्जैन आश्रम** में आगमन हुआ । प्रतिदिन शाम को दूर-दराज से दर्शनार्थी आते व एकांत अवसर में मार्गदर्शन पाते ।

२२ व २३ अगस्त को **उज्जैन** के दशहरा मैदान में भक्ति-ज्ञान का दरिया लहराया । विशाल मैदान इस तरह भरा-भरा दिखे ऐसा अवसर कभी-कभी आता है । सुबह-सुबह अनार का प्रसाद, दोपहर में खीर का प्रसाद और जो दोनों सत्रों में नहीं आ पाये उनके लिए फिर से खीर के प्रसाद के साथ ध्यान व सत्संग के प्रसाद से उज्जैन व आस-पास के इलाकों से उमड़ा जनसैलाब तृप्त हुआ । उज्जैन, देवास, इन्दौर, रतलाम, कायथा व आस-पास के इलाकों से बसें, ऑटो, ट्रैक्टर आदि साधनों से बड़ी संख्या में आ रहे लोगों ने उज्जैन के कुंभ की याद दिलायी । नूरानी निगाहों के धनी बापूजी के ज्ञान, शांति और आनंद के धन से सभी आह्लादित थे, तृप्त थे ।

पिछले १७-१८ साल से इन्दौर के निकट स्थित महूवासियों की प्रार्थना चली आ रही थी । वह फलीभूत हुई और **२३ व २४ अगस्त** का सत्संग **महूवासियों** की झोली में रहा । जीवन में सत्संग का महत्त्व बताते हुए बापूजी बोले : ''दुनिया में एक से बढ़कर एक श्रेष्ठ वस्तुएँ हैं लेकिन सबसे श्रेष्ठ है कल्पवृक्ष, जो हर कामना पूरी करता है लेकिन उससे भी श्रेष्ठ है सत्संग, जो नश्वर आकर्षण और नश्वर कामनाओं को मिटाकर शाश्वत परमात्मा के प्रेमप्रसाद से परितृप्त कर देता है ।''

२५ अगस्त को प्रभुप्रसाद के प्यासे **खरगोन (म.प्र.) वासियों** की पुरानी पुकार पूर्ण हुई व **२६ अगस्त** को अपने तन-मन-धन से सेवा कर **खंडवा (म.प्र.)** व आस-पास की जनता को सत्संग-प्रसाद से पावन किया खंडवा की समिति ने । ❐

पूज्य बापूजी के आगामी सत्संग-कार्यक्रम

*** गुड़गाँव (हरि.) में सत्संग ***

दिनांक : ४ (शाम) से ६ सितम्बर (सुबह तक)

सत्संग स्थल : गवर्नमेन्ट कॉलेज के सामने, सेक्टर-९

संपर्क : ०१२४-२२२१०३०, ९८१८१३३२५५, ९८१८४०८३१३, ९८९९५२७३१४.

*** राजकोट (गुज.) में सत्संग ***

दिनांक : ११ से १३ सितम्बर

सत्संग स्थल : रेसकोर्स ग्राउन्ड

संपर्क : ९८२५९८९८४१, ९९२४३११९९७, ९३७५६४७५७०.

राजस्थान में आयोजित सत्संग-कार्यक्रमों की झाँकियाँ

चित्तौड़गढ़

टोंक

बाँसवाड़ा

भीलवाड़ा

मालपुरा

गांगड़ तलाई
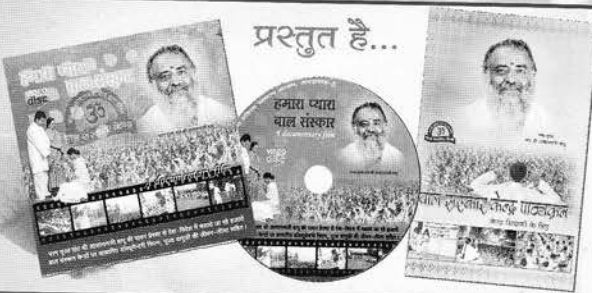
पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से देश-विदेश में चलाये जा रहे हजारों बाल संस्कार केन्द्रों पर आधारित डॉक्युमेन्टरी फिल्म 'हमारा प्यारा बाल संस्कार' एवं बाल संस्कार केन्द्र संचालन हेतु 'बाल संस्कार केन्द्र पाठ्यक्रम' आप अपने नजदीकी आश्रम अथवा आश्रम के सत्साहित्य केन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं।

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
MR/TECH/WPP-42/NW/09-11
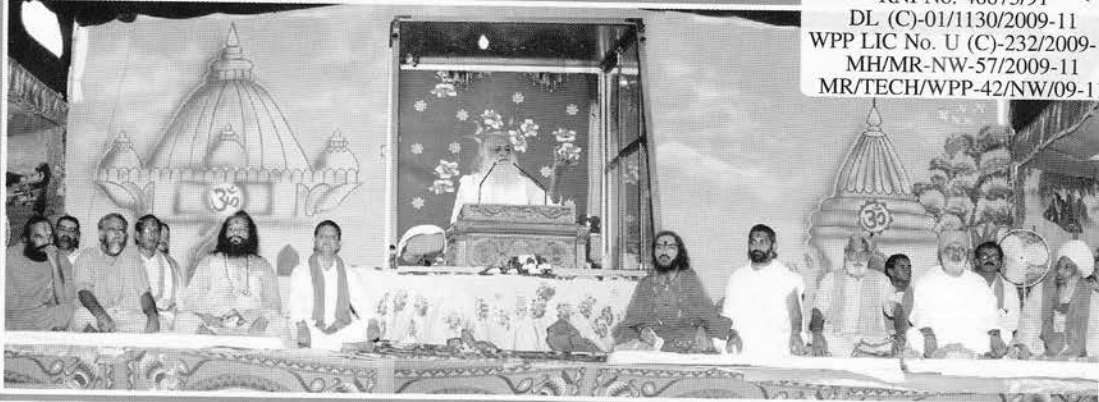
भारतीय संस्कृति पर हो रहे कुठाराघात को निष्फल करने हेतु विभिन्न सम्प्रदायों के संत एकजुट हुए।

अवधूती मस्ती

आत्मसाक्षात्कार के बाद एक बार अवधूती मस्ती में पूज्य बापूजी नर्मदा किनारे स्थित नारेश्वर (गुज.) के पास घने जंगल में जा पहुँचे। वहाँ एक बड़े वृक्ष के नीचे बैठकर अपने प्यारे प्रभु के ध्यान में मग्न हो गये। पूरी रात इसी प्रकार बीत गयी, सुबह हो गयी। पूज्यश्री प्रातर्विधि से निवृत्त हुए तो कुछ भूख का एहसास हुआ। तब उन्होंने

सोचा मैं न कहीं जाऊँगा, यहीं बैठकर अब खाऊँगा।
जिसको गरज होगी आयेगा, सृष्टिकर्ता खुद लायेगा।।

इतने में सिर पर साफा बाँधे दो किसान हाथ में कुछ खाद्य-पेय लेकर वहाँ आ पहुँचे और पूज्यश्री के चरणों में प्रणाम करके बोले : ''महाराजजी ! स्वीकार करो।''

तब पूज्यश्री ने उनसे कहा : ''भाई ! लगता है तुम लोग रास्ता भूल गये हो। यहाँ कोई दूसरे महाराजजी रहते होंगे, जिनके लिए तुम खाद्य-पेय लेकर आये हो। इसे ले जाकर उन्हें खिलाओ।''

वे बोले : ''नहीं बापूजी ! यह सब हम आपके लिए ही लाये हैं। हमने सपने में आपको जंगल में बैठे हुए देखा और साथ ही यहाँ पहुँचने का रास्ता भी। हमें ऐसी प्रेरणा हुई कि प्रातः जल्दी ही आपश्री की सेवा में पहुँच जाना चाहिए। इसलिए हम यहाँ आ पहुँचे हैं। हमारे गाँव में और कोई संत नहीं हैं। आप वहाँ पधारेंगे तो हम सबका भी कल्याण होगा।''

पूज्यश्री ने आसन आदि करके अल्पाहार लिया, फिर वहीं जमीन पर **'जोगी तो रमता भला'** लिखकर वहाँ से भी चल पड़े।

रणे वने आपत्ति में वृथा डरे जन कोय। जो रक्षक जननी जठर, सो हरि गये न सोय।।

Posting at PSO Ahmedabad between 25th of preceding month to 10th of current month. ✻ Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. ✻ Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.